दिसम्बर-2014 ◆ वर्ष 3 ◆ अंक 7 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

दिसम्बर-२०१४

पाप के बोझ से मुक्ति मिले
जीवन हल्का हो जावे
ऊँचा ही ऊँचा उठ जाऊँ
साथ प्रभु का पाऊँ
निश्चित ही संभव हो जावे
'सत्यार्थ' आचरण में लाऊँ

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १०
३६

लाजवाब खाना !
एम.डी.एच. मसाले
हैं ना !
MDH
मसाले
असली मसाले सच-सच
Garam masala
Sambhar masala
Chunky Chat masala
Shahi Paneer masala
MDH DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
Dal Makhani masala
Kitchen King
Chana masala
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015
Website : www.mdhspices.com
ESTD. 1919

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११५
पौष कृष्ण प्रथमा
विक्रम संवत्
२०७१
दयानन्दाब्द
१९०

December- 2014

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २२

हलचल २३

०४ वेद सुधा
०६ ऋषि दयानन्द एक मूल्यांकन
११ सुनहरे युग की पहली किरण
१३ एक विस्मृत हिन्दू सम्राट
१६ ऐसे बन सकता है 'अखण्ड भारत'
२१ दया की आँखें खोल देख लो
२४ कहो वेद हाँ या सहो वेदना
२७ सत्यार्थप्रकाश पहेली-११
२८ महात्माजी का छात्रों के प्रति वात्सल्य
२९ कथा सरित
३० स्वास्थ्य- सर्दी की दुआ बथुआ

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ३ अंक - ७

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६६४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०९३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

यजुर्वेद में राष्ट्र-भावना

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधि महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पतां। - यजुर्वेद २२/२२

डॉ. भवानीलाल भारतीय

वेदों के युग में राष्ट्र की धारणा आज के समान नहीं थी तथापि इन ग्रन्थों में 'राष्ट्र' शब्द का बहुतायत से प्रयोग हुआ है। वैदिक चिन्तन में तो सारा विश्व ही मनुष्य जाति के सामान्य निवास स्थल की भाँति कल्पित किया गया है। वेद में प्राणिमात्र का आधार यह सम्पूर्ण धरती ही मनुष्य की माता के रूप में चर्चित हुई है। वसुधा, वसुन्धरा, रत्नों को धारण करने वाली, नानारूपा रत्नगर्भा धरती यहाँ निवास करने वाले प्रत्येक मानव की माता के तुल्य है और वे उस के पुत्र हैं।

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः। - अथर्व. १२/१/१२

देश और राष्ट्र के अर्थों में भी अन्तर किया जाता है। प्रायः भौगोलिक इकाई के लिए देश का प्रयोग होता है जब कि किसी प्रदेश विशेष में बसे नागरिकों की संस्कृति, भाषा, विचार पद्धति तथा विरासत की एकता को लक्ष्य में रख कर 'राष्ट्र' को परिभाषित किया जाता है। भारत तथा पाकिस्तान के अलग-अलग राष्ट्रों के रूप में अस्तित्व में आने के पीछे जो रूढ़िबद्ध धारणा प्रसारित की गई वह यही थी कि हिन्दू और मुसलमान जातियाँ धर्म तथा पूजा-उपासना की दृष्टि से तो भिन्न हैं ही, सभ्यता और संस्कृति (तहजीब और तमद्दुन) की दृष्टि से भी वे समान नहीं हैं। अतः एक राष्ट्र के समान नागरिक बन कर रहना उन के लिए सम्भव नहीं है। आगे चल कर बंगला देश के जन्म ने इण्डियन मुस्लिम लीग की इस धारणा को भी निर्मूल कर दिया कि केवल मजहब के आधार पर किसी देश को एक बनाकर रखा जा सकता है। राष्ट्र के नियामक तत्त्व कुछ अन्य हैं, मजहब नहीं।

निश्चय ही एक राष्ट्र में रहने वालों की भाषाएँ अनेक हो सकती हैं। वेद में भी **'जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं'** अथर्ववेद १२/१/४५ कह कर उस धरती का बखान किया गया है जहाँ नाना भाषाएँ और बोलियाँ बोलने वाले लोग रहते हैं, तथापि भाषा की एकता तथा संस्कृति की समानता राष्ट्रीय एकता के अनिवार्य तत्त्व समझे जाने चाहिए। अंग्रेजी में जिसे National mainstream (समान राष्ट्रीयधारा) कहा जाता है वह किसी देश में बहने वाली सांस्कृतिक एकता की समान धारा है और इसे ही उस राष्ट्र की रीढ़ कहा जा सकता है। तथापि आज कल बहुलतावादी सोच से प्रभावित होकर 'राष्ट्र' को ऐसे मनुष्य समूह के रूप में परिभाषित किया जाता है जो बहुभाषी (Multi-lingual) हो, बहुसंस्कृति युक्त (Multi-racial) भी हो। तथापि राष्ट्रवाद को मानने वाले लोगों को राष्ट्र के नागरिकों के बीच समानता तथा एकता के कुछ सूत्र तो तलाशने ही होंगे।

यजुर्वेद में राष्ट्र के स्वरूप तथा उस की आदर्श स्थिति को २२वें अध्याय के २२वें मन्त्र में प्रस्तुत किया गया है। जो तत्त्व राष्ट्र को प्रबल, शक्तिशाली तथा स्वस्थ बनाते हैं उन को यहाँ क्रमशः गिनाया गया है। वेद की प्रमुख धारणा है कि किसी राष्ट्र के संचालन में उन प्रबुद्ध और मेधावी जनों की प्रमुख भूमिका रहती है जो 'ब्राह्मण' नाम से पुकारे जाते हैं।

निश्चय ही ब्राह्मण जन्माधारित तथा परम्परा से आया वर्ग नहीं है। गुणों के संचय तथा त्याग-भावना के कारण ही ब्राह्मण राष्ट्र के लिए उपयोगी सिद्ध होता है। मानापमान की चिन्ता किये बिना 'सम्मानाद् ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेद् विषादिव,' स्वहित से राष्ट्र हित को वरीयता देने वाले ही 'ब्राह्मण' संज्ञा के अधिकारी हैं। इन ब्राह्मणों से हमें ब्रह्मवर्चस् (तेज

तथा प्रबल आत्मिक शक्ति) की अपेक्षा रहती है। पुरातन भारतीय इतिहास का अनुशीलन करने पर हमें ऐसे अनेक तेजस्वी, प्रतिभाशाली, त्यागनिष्ठ, तपोनिष्ठ तथा समर्पणशील ब्राह्मणों के उदाहरण मिलते हैं जिन्होंने समाज का सफल नेतृत्व तथा मार्गदर्शन किया तथा हताशा एवं निराशा के वातावरण में भी अपने देशवासियों को उत्साह तथा पुरुषार्थ का मंत्र दिया।
कह सकते हैं कि यदि अयोध्याधिपति राम को महर्षि वसिष्ठ तथा विश्वामित्र जैसे धर्म, नीति, कर्त्तव्य तथा आचरण के तत्त्वों को जानने वाले महाप्राण व्यक्तियों का नेतृत्व और मार्गदर्शन नहीं मिलता तो वे उस 'रामराज्य' की स्थापना नहीं कर पाते, जिस का उल्लेख कर गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी लेखनी को धन्य किया है। (रामचरितमानस-उत्तरकाण्ड) महाभारत के काल में मुख्यतः क्षत्रियों ने ही राष्ट्र एवं शासन का मार्गदर्शन करने वाले प्रबुद्ध जनों की भूमिका निभाई थी। भीष्म के उन उपदेशों को महाभारतकार ने शान्तिपर्व और अनुशासनपर्व में श्लोकबद्ध किया है जो जीवन और जगत् के उत्थान में सहायक हैं। कृष्ण का गीतोपदेश तथा महामति विदुर द्वारा महाराज धृतराष्ट्र को सम्बोधित कर, दिया गया नीति का उपदेश तत्कालीन युग के मनस्वी तथा वर्चस्वी पुरुषों द्वारा मानव जाति के व्यापक हित के लिए दिये गये उपदेशों का उदाहरण है। 'हिन्दू पद पादशाही' के स्वप्नद्रष्टा शिवा जी महाराज को यदि समर्थ स्वामी रामदास की प्रेरणा और प्रोत्साहन नहीं मिलता तो वे उस अत्याचार तथा दमन को समाप्त करने में सफल नहीं होते जो दिल्ली के धर्मान्ध तथा क्रूर सम्राट द्वारा चलाया जा रहा था।

उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय नवजागरण के सूत्रधार स्वामी दयानन्द ने भी राष्ट्र-जागरण का शंखनाद किया और स्वयम् उपदेशक की भूमिका में रहकर भारतीय समाज के धार्मिक, नैतिक तथा सांस्कृतिक पुनरुत्थान की रूपरेखा प्रस्तुत की। स्वामी विवेकानन्द की ओजस्वी वाणी तथा तेजस्वी उपदेशों ने न केवल भारत बल्कि पश्चिमी देशों में भारतीय धर्म तथा सभ्यता के गौरव को स्थापित किया तथा बताया कि संसार को धर्म, नैतिकता तथा सभ्यता का पाठ पढ़ाने में भारतवासी आज भी उतने ही सक्षम हैं जितने पहले थे। यह दूसरी बात है कि भौतिक उन्नति में वे पिछड़ गये हैं।
राष्ट्र-निर्माण में प्रतिभा-सम्पन्न ब्राह्मणों के योगदान और एतद्-विषयक कामना के पश्चात् प्रस्तुत मंत्र उन क्षत्रियों का उल्लेख करता है जो युद्ध में अपने तीक्ष्ण आयुधों से शत्रु-सेना को पराजित करते हैं तथा जिन के तीखे बाणों से शत्रु-पक्ष बिंध जाता है।
युद्ध-संचालन में सक्षम सेनापति ऐसे राष्ट्रों को विजय प्राप्त कराते हैं तथा अत्याचार और दमन से प्रजा को छुटकारा दिलाते हैं। भारतीय इतिहास और परम्परा में ऐसे महारथी वीरों के अनेक उदाहरण मिलते हैं जिन्होंने युद्धों में अप्रतिम शौर्य का प्रदर्शन करने के साथ-साथ कोटि-कोटि पीड़ित; शोषित तथा त्रस्त लोगों के कष्टों का निवारण किया। त्रेताकालीन राम ने असुरों द्वारा प्रजा पर किये जाने वाले अत्याचारों से धरती को बचाने के लिए हाथ उठाकर प्रतिज्ञा की थी कि वे आततायी वृत्ति से मुक्ति दिलायेंगे। 'निशिचरहीन करौं मही भुज उठाय प्रण कीन्ह।'
मध्यकाल के इतिहास में महाराणा प्रताप, शिवा जी तथा सिखों के दशम गुरु गोविन्दसिंह जैसे क्षत्रिय महारथियों के उदाहरण मिलते हैं। उस से पहले के इतिहास में चाणक्य जैसे ऋषि-कल्प महापुरुष से प्रेरणा लेकर अत्याचारी नन्द वंश को समाप्त करने वाले सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य की वीरता की गाथा तत्कालीन साहित्य में मिलती है। द्रष्टव्य-विशाखदत्त रचित मुद्राराक्षस (नाटक) तथा जयशंकरप्रसाद रचित नाटक-चन्द्रगुप्त
गीता के प्रवक्ता कृष्ण की तो प्रतिज्ञा ही थी कि साधुजनों की रक्षा तथा दुष्टजनों के विनाश के लिए उन का सुदर्शन चक्र सदा तैयार रहा है। उन में जितनी वीरता तथा पराक्रम था उतनी ही थी नीतिमत्ता तथा कूटनीतिक चातुरी। तभी तो पाण्डवों को संरक्षण तथा मार्गदर्शन देकर कृष्ण ने आर्यावर्त की पावन भूमि से जरासन्ध, शिशुपाल, दन्तवक्र, कौरव आदि अत्याचारियों का अन्त किया।
राष्ट्र के निर्माण तथा उस की उन्नति में स्वस्थ, पुष्ट तथा उपयोगी पशुधन का भी महत्त्व है। विशेषतया कृषिप्रधान देशों में खेती में सहायक गाय, बैल, भैंस जैसे चौपायों का महत्त्व निर्विवाद है। यान्त्रिक सभ्यता के विकास के साथ आवागमन के साधनों में नवीन क्रान्ति आई है किन्तु एक युग ऐसा भी था जब मुख्यतया बैलगाड़ी तथा अश्वारोहण ही यातायात तथा

गमनागमन के मुख्य साधन थे। वेदों में गो-महिमा के अनेक मंत्र तथा गोरक्षा और गोपालन को मानव सभ्यता के लिए अत्यन्त हितकारी बताया गया है। वस्तुतः यहाँ मानव और पशु की सापेक्षिक महत्ता बताई गई है।

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट॥ - ऋग्वेद ८/१०१/१५

राष्ट्र-निर्माण में नारी की भूमिका से इन्कार नहीं किया जा सकता। मध्यकाल में चाहे नारी अत्याचार, शोषण तथा अवहेलना का शिकार रही, किन्तु वेदकालीन समाज में उस को पुरुष की बराबरी का स्थान और सम्मान मिला हुआ था। वेदमंत्रों के द्रष्टा पुरुष ऋषियों की भाँति उन नारी ऋषिकाओं की भी नामावली हमें उपलब्ध होती है जिन्होंने विशिष्ट वेदमंत्रों के रहस्य को जाना, उन में विवेचित गूढ़ भावों को हृदयंगम किया तथा जिन के महत्त्व को समाज में प्रचारित किया था। शौनक रचित बृहद्देवता में घोषा, अपाला, लोपामुद्रा, रोमशा, शची, इन्द्राणी आदि को मंत्रों की द्रष्टा कहा गया है।

उन्हीं महीयसी महिलाओं के प्रति कृतज्ञता प्रदर्शन करने के लिए आज तक उन के नामों का उल्लेख तत्-तत् मंत्रों पर लिखा मिलता है, जिन की वे द्रष्टा थीं। गोधा, घोषा, अपाला, लोपामुद्रा, रोमशा, शची, इन्द्राणी आदि ऋषिकाओं के नाम उक्त तथ्य की साक्षी देते हैं।

दार्शनिक चिन्तन तथा ब्रह्म तत्व के अनुशीलन में उपनिषद् युग की गार्गी, मैत्रयी, सुलभा आदि ब्रह्मवादिनी नारियों का नाम आज भी लिया जाता है।

गार्गी तथा मैत्रेयी के द्वारा किये गये तत्त्व विचार के लिए बृहदारण्यक तथा छान्दोग्य उपनिषत् प्रसंग द्रष्टव्य हैं। शतपथ ब्राह्मण में गार्गी-मैत्रेयी संवाद द्रष्टव्य है। - (१४/६/६)

चारित्रिक दृष्टि तथा गृहस्थ के दायित्वों के समुचित निर्वाह की दृष्टि से सीता, सावित्री, अनुसूया, कुन्ती, द्रौपदी आदि महिलाओं के गौरवगान से हमारे इतिहास-पुराण भरे पड़े हैं।

स्वामी दयानन्द ने तो महाराजा दशरथ की रानी कैकेयी के युद्धविद्या में निपुण होने की बात कही है। सत्यार्थप्रकाश-३ वां समुल्लास उन की गुणज्ञता को दर्शाता है।

वीरता और पराक्रम में भी भारतीय नारी ने सदा ऊँचे मापदण्ड स्थापित किये हैं। दुर्गावती, चाँद बीबी तथा महारानी लक्ष्मी बाई के जीवन इस तथ्य के साक्षी हैं कि वैदिक परम्पराओं का मान करने वाली भारतीय नारी ने समाज और राष्ट्र के निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इन नारियों की शासन-क्षमता को सदा स्वीकार किया गया है। क्रमशः ....

३/५ शंकर कॉलोनी
श्री गंगानगर- ३३५००१

नवलखा महल में नवनिर्मित "आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा" एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

मैं अपने आप को सौभाग्यशाली समझता हूँ कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के कर्म स्थली को देखने का अवसर मिला। आर्यावर्त्त गैलेरी जो कि एक सर्वश्रेष्ठ गैलेरी में से एक है में जिस प्रकार स्वामी दयानन्द और अनेक महापुरुषों के बारे में जिस तरह से बताया गया है वह निश्चित रूप से अदभुत् एवं अविस्मरणीय है। मुझे पूरी आशा है लोग इससे प्रेरित होंगे। - **अमित कुमार, नारनौल**

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सुख-समृद्धि और अक्षय
कीर्ति के आधार,
साहस, संघर्ष, ईमानदारी
परोपकार और सुन्दर विचार।
सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश(म्याँमार)स्मृति पुरस्कार

* न्यास द्वारा ON LINE TEST प्रारम्भ।
* वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
* आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
* विश्व भर के लोगों से इस ON LINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

वेबसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

आत्म निवेदन

करुण पुकार

गत दिनों में एक Social Media पर पाकिस्तान से प्रेषित एक वीडियो देखने में आया। इतना वीभत्स कि रौंगटे खड़े हो गये। वीडियो में एक गधे को बुरी तरह तड़पा-तड़पा कर काटा गया था। देखा भी न जाय इतना दर्दनाक दृश्य। पर उस तथाकथित पाकिस्तानी महिला पत्रकार को इस दर्द की तनिक भी अनुभूति नही थी। उसका सारा ध्यान हराम तथा हलाल के गोश्त में लगा हुआ था। वह कसाई को थप्पड़ मार-मार कर बार-बार यही कहे जा रही थी या खुदा! यह हराम का गोश्त खिलाता है। इस दृश्य को देखकर मेरा सम्पूर्ण बजूद हिल गया। किसी वीभत्स से वीभत्स दृश्य को लिख देना अथवा पढ़ पाना आसान है पर उसे देखना, निरीह जानवर की चीखें सुनना आसान नहीं। पर उस दृश्य को कारित करने वाले का हृदय कितना क्रूर होगा अनुमान लगाना कठिन नहीं। अपनी जिह्वा के स्वाद के लिए क्या निरीह पशुओं को मारना मनुष्यता है? नहीं। यह तो घोरतम पाशविकता है। धर्म के नाम पर, कर्मकाण्डों के नाम पर, ईश्वर/देवी/देवता को प्रसन्न करने के नाम पर, तथाकथित कुर्बानी देने के नाम पर, अथवा भोज्य सामग्री प्राप्त करने के नाम पर छोटे से छोटे प्राणी का वध अनैतिक ही नहीं पाप है। सच्चे अर्थों में जो धर्म है वह ऐसी हिंसा की आज्ञा कभी नहीं दे सकता। वैदिक धर्म संसार का प्राचीनतम व सार्वभौम धर्म है। वेद में अनेकों स्थलों पर पशु वध से विरत् रहने का आदेश है। वेद में तो यहाँ तक कहा है-

य: पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते यो अश्व्येन पशुना यातुधान:।
यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च॥ - ऋग्वेद १०/७८/१६

अर्थात् जो राक्षस मनुष्य का, घोड़े का और गाय का मांस खाता हो तथा दूध की चोरी करता हो उसका सिर कुचल देना चाहिए।

सभी प्राणियों के वध का निषेध करते हुए लिखा है- **'मा हिंस्यात् सर्वभूतानि'।** वस्तुतः ईश्वर तो प्राणिमात्र का पिता है वह किसी भी प्राणी के मारने की आज्ञा क्योंकर दे सकता है या प्रसन्न हो सकता है? स्वार्थी मनुष्य जिस-जिस पदार्थ से प्रसन्न होते थे वैसे ही देवता भी उन्होंने कल्पित कर लिए ताकि उस पर तत्-तत् पदार्थ चढ़ाकर प्रसाद रूप से वह उन्हें सेवन करने को मिल जाय। पशुओं को मारना नहीं उनकी रक्षा करना मनुष्यत्व है। **'पशून पाहि'** (यजु. १/१) अर्थात् पशुओं की रक्षा करो। मनुष्य की विशेषता करुणा तथा परोपकार है। भारतीय मनीषा में करुण रस का प्रवाह सतत् देखा जा सकता है। क्रोञ्च पक्षी-वध ने बाल्मीकि में करुण रस संचार कर संसार के आजतक के सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में प्रतिष्ठत करवा दिया। इतिहास में झाँकें तो कहीं हमें श्रीराम के पूर्वज सम्राट रघु अपने जीवन को गौ-रक्षा हित बलिदान करने हेतु तत्पर दिखायी देते हैं, कहीं महाराज शिवि कबूतर की जान बचाने हेतु अपने मांस को काट-काटकर देते दिख पड़ते हैं तो कहीं रामकुमार सिद्धार्थ हंस की जान बचाने को तत्पर। हमारी आँखों के सामने वह दृश्य साकार हो उठता है जब प्राणिमात्र की वेदना को अपने हृदय में स्थान देने वाले देव दयानन्द एक दिन उदयपुराधीश की राज्यसभा में उनके समक्ष खड़े होकर स्वयं को बलि के नाम पर मारे जाने वाले पशुओं के वकील के रूप में प्रस्तुत करते हैं और उनसे अनुरोध करते हैं कि देवी-देवताओं के नाम पर पशुओं के इस क्रूर वध को वे बन्द करें। महाराणा स्वामी जी के कथन के औचित्य को मान तो गये किन्तु उन्होंने विनम्रता पूर्वक कहा कि शताब्दियों से प्रचलित इस बर्बर प्रथा को एक बार ही समाप्त नहीं किया जा सकता तथापि उनका प्रयत्न होगा कि धीरे-धीरे जनमत

को शिक्षित कर वे इसे बन्द कर दें। ऋषि के आर्यसमाज ने पशुबलि रोकने के जो प्रयास किए, वे आज के समय में स्वप्न सदृश दिखायी देते हैं। धर्म के नाम पर होने वाले पशुबलि के जघन्य अपराध को रोकने हेतु आर्यसमाजियों ने जो प्रयास किए तथा दुःख उठाए उनमें से कुछ के तो हम भी साक्षी रहे हैं। सवाईमाधोपुर, हिण्डौन के पास करौली में प्रसिद्ध स्थान 'कैला देवी' का है। एक समय था उस मंदिर में जब वार्षिक मेला लगता था तो मंदिर के प्रांगण में सैंकड़ों अबोध पशुओं का वध होता था, बलि दी जाती थी। हमारी आयु ८-१० वर्ष रही होगी पर वह खून-कटे पशु-मंदिर-प्रांगण आज भी स्मृत हैं। उस समय आर्यसमाज (जिसमें हिण्डौन, सवाईमाधोपुर, बयाना, भरतपुर और मथुरा के आर्यसमाजी विशेष सक्रिय थे) ने बड़ी प्रभावशाली भूमिका निभायी। मेले के दिनों में आर्यसमाज के कैम्प लगा करते थे। पशुबलि के विरोध में जन-जागृति के कार्यक्रम अनेक प्रकार से किए जाते थे। प्रारम्भ में खूब विरोध हुआ। अनेक कष्ट सहने पड़े पर अन्ततोगत्वा सफलता प्राप्त हुयी। हम इस सब के साक्षी रहे क्योंकि पूज्य पिताजी की इसमें सक्रिय भूमिका थी। १९६७ के गोरक्षा आन्दोलन में जेल जाने वालों में आर्यसमाजी ७० प्रतिशत से अधिक थे। हमारा पूरा परिवार जेल गया। हम दसवीं कक्षा के विद्यार्थी थे। एक मास हमने भी तिहाड़ जेल में व्यतीत किया। अस्तु।

कहने का तात्पर्य यह है कि सामाजिक कुरीतियों के निवारण हेतु अनेक मोर्चों पर संघर्ष करने वाले आर्यसमाज ने पशु-बलि के खिलाफ भी सक्रिय भूमिका निभाई थी। परन्तु आज Shining Arya Samaj का युग आ गया है। असत्य के विरुद्ध लड़ने की जिजीविषा समाप्त प्रायः हो गयी है। Real Arya Samaj के समक्ष चुनौतियों का या तो हमें अन्दाजा नहीं या सच कहें तो उस ओर, हम देखना नहीं चाहते। क्योंकि उस मार्ग पर काँटे तथा गुमनामी के अँधेरे हैं। Shining Arya Samaj कीर्ति तथा यश का मार्ग प्रतीत होता है। अस्तु।

निवेदन हम यह करना चाहते हैं कि पशुबलि तथा मांसाहर किसी भी दृष्टि से जायज नहीं है। हमें एक छोटे से छोटे जीव को भी मारने का अधिकार नहीं है। प्रभु की सृष्टि में छोटे से छोटे सदस्य का अपना महत्व है। उसे समाप्त कर हम जघन्य अपराध तो कर ही रहे हैं, अपना भी नुकसान कर रहे हैं। जानवर भी हमारे मित्र हैं, सहायक हैं। गाय, बैल, भैंस, भैंसा, बकरी जैसे महा उपकारक पशुओं की तो बात क्या करें एक छोटा सा जीव गुबरीला भी हमारा कितना हितकारी है देखें- ये बाग-बगीचे, खेतों में पौधों व फसल को नुकसान पहुँचाने वाले कीड़ों को खाकर नष्ट कर देते हैं। ये पौधे खाने वाले कीड़ों की कॉलोनियों में सैकड़ों अण्डे देते हैं। जैसे ही 'लार्वा' बनते हैं वे तुरन्त ही फसल को नष्ट करने वाले कीड़ों को खत्म करना प्रारम्भ कर देते हैं। बाज, गिद्ध जैसे पक्षी प्रकृति के सफाई कर्मचारी हैं। अतः देवी देवताओं को प्रसन्न करने के निमित्त से स्वयं की स्वार्थपूर्ति निन्दनीय है। उसी प्रकार खुदा के नाम पर असंख्य बकरों को मारा जाना तथा उसे कुर्बानी का रूप देना उचित नहीं है। यहाँ यह अवश्य है कि हिन्दुओं में अनेक सुधारवादी आन्दोलन हुए हैं। हिन्दू-समाज अन्ततोगत्वा सुधारों को स्वीकार कर लेता है। यही कारण है कि आज हिन्दुओं में पशुबलि का प्रचलन समाप्त प्रायः हो गया है। मुस्लिम समाज में भी अपने अन्दर से इसी प्रकार के सुधारों हेतु प्रयास होना चाहिए। क्या विडम्बना है कि एक ओर गधे पर ज्यादा बोझ लाद देने जैसे छोटे कार्य (यह भी उचित नहीं) पर कानून का उल्लंघन होता है। पशु-प्रेमी संगठन लामबन्द हो जाते हैं वही धर्म के नाम पर सहस्रों पशुओं की हत्या कर दी जाती है और इस ओर से सब आँखे मूँदे बैठे हैं। हमें चाहिए हम वेदाज्ञा का पालन करते हुए प्राणी मात्र के मित्र बनें।

प्रियो देवानां भूयासम्। प्रियः प्रजानां भूयासम्।
प्रियः पशूनां भूयासम्। प्रियः समानानां भूयासम्। - अथर्व. १७/१/२-५

पशु-पक्षी आदि निरीह प्राणियों की हत्या का क्रम शीघ्र बन्द हो इस ओर कठोर कदम उठाए जाने चाहिए, ऐसा न हो कि इनकी करुण पुकार सृष्टि को विनष्ट कर दे। मानव के समस्त सुखों का मूलोच्छेद कर दे। (जनवरी अंक में Pain waves नामक लेख अवश्य पढ़ें)।

विष्णु शर्मा ने पञ्चतंत्र में ठीक लिखा है कि-

'जंगलों को काटने वाले, पशुओं को मारने वाले और मनुष्यों की बलि देने वाले यदि स्वर्ग को जाएँगे तो भला नरक को कौन जाएगा?'

- **अशोक आर्य**
चलभाष- ०९३१४२३५१०१

ऋषि दयानन्द एक मूल्यांकन

पंडित श्री भगवद्दत्त

{गत शती के पाँचवें दशक में महान् वेदज्ञ पंडित श्री भगवद्दत्त ने आई.ए.एस. के छात्रों के समक्ष भारतीय संस्कृति एवं इतिहास विषय पर कुछ परीक्षोपयोगी व्याख्यान दिए थे। इन व्याख्यानों में जब भारतीय नवजागरण का विषय आया तो पंडित भगवद्दत्त जी ने आर्य समाज और ऋषि दयानन्द के बारे में जो विवेचन प्रस्तुत किया वह निम्न था - डॉ. भवानी लाल भारतीय}

उन्नीसवीं शताब्दी में उत्पन्न नवजागरण के आन्दोलनों की तीसरी धारा आर्यसमाज की थी। प्रथम धारा ब्रह्मसमाज (राजा राममोहन राय द्वारा स्थापित) की थी। आर्य समाज के प्रवर्तक सत्यता और स्वच्छ जीवन के अवतार और अपने रोम-रोम में देशहित की भावना से परिपूर्ण स्वामी दयानन्द सरस्वती (१८८१ वि. १९४६ वि.) थे। यह धारा उत्तर भारत में पर्याप्त फैली। इसका ध्येय आर्ष ग्रन्थों का प्रचार, संस्कृत विद्या का उद्धार और वैदिकमत का प्रसार था। पहली और दूसरी धाराओं की अपेक्षा यह धारा विशुद्ध रूप से भारतीय थी। इस धारा के द्वारा भारत में स्वतन्त्रता प्राप्त करने की उत्कट इच्छा उत्पन्न हुई।

मथुरा का दण्डी- जिस समय अंग्रेजों के तेल और अंग्रेजों की बत्ती से होने वाले धुंधले प्रकाश में ब्रह्मसमाज और प्रार्थना समाज के उत्साही सदस्य बंगाल और महाराष्ट्र में ईसाइयत की वेगवती तरंग को थोड़ा-थोड़ा रोक रहे थे, उस समय मथुरा नगर में विशुद्ध भारतीय स्नेह (तेल) और विशुद्ध भारतीय बत्ती के उज्ज्वल प्रकाश में एक नेत्रहीन दण्डी संन्यासी भारतीय ज्ञान की सरिता बहा रहा था। नाम था उसका विरजानन्द। उसके अन्तःनेत्र ज्ञान की रश्मियों से युक्त हो चुके थे। उसने दैवी कृपा से शब्दार्थ सम्बन्ध के नित्य पक्ष को समझ लिया थ। वह शब्द प्रमाण (वेद प्रमाण) का महत्व समझ चुका था। वह महान् वैयाकरण अपनी वृद्धावस्था में भी छात्रों को स्नेहमय होकर विद्या पढ़ाया करता था। उसमें क्षमता थी कि जिस प्रकार पुराकाल में एक दण्डी स्वामी (उसका नाम दाण्डायन था) ने अपने अपूर्व आत्मबल से सिकन्दर के अभियान को परास्त किया था, उसी प्रकार वह अपने सूक्ष्म ज्ञान से भारत में अंग्रेजी प्रभाव को दूर करने में प्रयत्नशील था। पर उसके लिए उसे कोई अलौकिक छात्र अब तक (१९६०) मिला नहीं था।

दयानन्द सरस्वती- दैव कृपा से दण्डी दयानन्द सरस्वती के रूप में उसे एक ऐसा छात्र मिल गया। संवत् (१९२३ वि. १९२५ वि.) तक दयानन्द सरस्वती ने दण्डी स्वामी विरजानन्द से मथुरा में विद्या पढ़ी। इस अध्ययन का यह फल था कि दयानन्द सरस्वती को शब्दार्थ सम्बन्ध की नित्यता का यथार्थ ज्ञान हो गया। यह विद्या वेदविदों में अलंकारभूत भर्तृहरि (वाक्यपदीय के रचयिता) के निधन के पश्चात् भारत में लुप्तप्रायः थी। हिमाचल से कन्याकुमारी तक इस विद्या की निर्मल सत्यता को समझने वाले विरले ही थे।

वेदों की ओर- इस विद्या के आधार पर स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की आधारशिला रखी। 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है' यह दयानन्द सरस्वती का सिंहनाद था। जयघोष था। दयानन्द सरस्वती का प्रभाव बढ़ता ही गया। ईसाई और इस्लाम मतस्थ इस प्रभाव से भयभीत हुए।

विजय का प्रकार- धर्म विजय का स्वामी दयानन्द का मार्ग नया नहीं था। जिस प्रकार उद्योतकर, कुमारिल, शंकर और उदयन ने बौद्धादि नास्तिक मतों को शास्त्रार्थों द्वारा निरन्तर पराजित किया था उसी प्रकार दयानन्द सरस्वती ने ईसाई और इस्लाम मत वालों को वाद (शास्त्रार्थ) के लिए ललकारा। दयानन्द सरस्वती का तर्क प्रबल था। दोनों मतवादी अपने अन्नदाता अंग्रेजों से शिकायतें करने लगे। शासक वर्ग तो था ही वैदिक मत का विरोधी। दयानन्द के अभियान को रोकने के लिए षड्यंत्र रचे गये। १९४० वि. में दयानन्द सरस्वती काल धर्म को प्राप्त हो गए।

आर्य समाज- स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना १८७५ में कर दी थी। उनके निधन के पश्चात् आर्य समाज की नौका के कर्णधार पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी, लाला लाजपतराय, महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द), महात्मा हंसराज और पंडित लेखराम हुए। ये सब वेदों में विश्वास तो रखते थे, पर वेद की नियत्ता के दर्शन के सूक्ष्म पक्ष में पूर्ण पारंगत नहीं थे। वे बढ़ते हुए पाश्चात्य प्रभाव को पूरा नहीं रोक सके। भारत के सब विश्वविद्यालयों में वेद का अध्ययन-अध्यापन पाश्चात्य पद्धति से हो रहा था। इस स्वतंत्रता के युग में भी वही मूर्खतापूर्ण पद्धति अपनाई जा रही थी। इस पर भी जनसाधारण में वैदिक संस्कृति की जड़ सुदृढ़ हो रही थी।

गुरुकुल पद्धति- आर्य समाज के काम का वर्णन अधूरा रहेगा जब तक उसकी शिक्षा प्रणाली के महत्वपूर्ण अंग

गुरुकुल पद्धति का उल्लेख न किया जाये। आर्य समाज ने अनेक गुरुकुल खोलें। उनमें भी उद्भिज विद्या, भौतिकी, सौर भौतिकी, रसायन, वास्तुविद्या, भूगर्भ विद्या आदि का अध्यापन पश्चात्य ढंग से होने लगा। तथापि इनकी पाठ्य पुस्तकें हिन्दी में तैयार की गईं।

असफलता- इस ढंग से अध्यापन के कारण प्राचीन विद्याएँ सोई रहीं। यहाँ के अध्यापक अनुसंधान नहीं कर सके। अंग्रेजी पठित अनेक लोगों ने कहा विद्या अथवा विज्ञान के क्षेत्र में पद्धति का भेद हो ही नहीं सकता। यह मत सर्वथा भ्रान्त है। जब संसार की उत्पत्ति आरम्भ से जरायुज, अण्डज, स्वेदज, उद्भिज भेद से हुई है तो उसमें विकास मत के लिए स्थान हीं रहता। इस ज्ञान को प्राप्त किए बिना विज्ञान का अध्यापन दोषपूर्ण रहा। अतः वैदिक संस्कृति के उद्धार का पूरा कार्य गुरुकुल भी नहीं कर सके। पर प्राचीन के प्रति श्रद्धा का भाव इन्होंने भी जागृत कर दिया।

आनुषंगिक कार्य- नमस्ते-प्रचार, जय सीताराम, जय श्रीकृष्ण, पालागन आदि के स्थान पर नमस्ते पद का व्यापक प्रचार संस्कृति के एक सूत्र में निबद्ध होते जाने का सूचक है। नमस्ते पद ने भारत और भारत के बाहर अपना स्थान प्राप्त कर लिया है। नमस्कार का प्रयोग नमस्ते का स्थान नहीं ले सकता।

नामशोधन- पंजाब और उत्तर प्रदेश में लोगों के पुराने और भ्रष्ट अर्थहीन नामों के स्थान पर उत्कृष्ट संस्कृत निष्ठ नाम रखना भी इसी दिशा का सूचक है। दयानन्द सरस्वती की प्रखर प्रतिभा ने वैदिक संस्कृति को भारत में पुनरुज्जीवित कर दिया।

{पुनश्च- पंडित भगवद्दत्त ने अध्ययन एवं अनुसंधान के जिन चारों क्षेत्रों में विशेष कार्य किया, वे हैं- भाषा विज्ञान, वैदिक वाङ्मय का इतिहास, भारतवर्ष का इतिहास तथा ऋषि दयानन्द विषयक शोध। सत्यार्थ प्रकाश का सम्पादन, ऋषि के पत्र व्यवहार का प्रकाशन तथा उनकी आत्मकथा का सम्पादन। उनका प्रथम ग्रन्थ ऋग्वेद पर व्याख्यान था जो डी. ए.वी. कॉलेज लाहौर के शोधविभाग से छपा था।}

प्रस्तुति- डॉ. भवानी लाल भारतीय

सुनहरे युग की पहली किरण

टंकाराश्री श्रीमती अरुणा सतीजा

लम्बी गुलामी के बाद देश आजाद हुआ। भारतीयों की आँखों में सुनहरे सपने हिलौरे मारने लगे। दिल हिलौरे क्यों न मारे! महात्मा गाँधी जी ने स्वराज्य तथा राम राज्य का सुहावना सपना जो दिखाया था। स्वराज्य में सुराज्य। सोने में सुहागा। ऐसा सोचने मात्र से ही सुखी जीवन के आनन्द की सुखद अनुभूति होने लगती है।

पंडित जवाहर लाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने। महात्मा गाँधी जी की हत्या के बाद देश की सत्ता नेहरू जी के हाथों में कैद हो गई। नेहरू जी के बाद देश की सत्ता गाँधी परिवार तक सिमट गई फिर क्या था। प्रधानमंत्री के घर जन्मजात प्रधानमंत्री पैदा होने लगे। प्रधानमंत्री का पद आनुवंशिक बन गया। भारत का भौतिक विकास बहुत अच्छा हुआ। बड़े कल कारखानों की स्थापना हुई। लोगों का जीवन स्तर भी काफी बढ़ा परन्तु गरीब और गरीब होने लगा। चारित्रिक, नैतिक तथा मानवीय मूल्यों का ह्रास होने लगा। गाँधी परिवार धनी और पाश्चात्य सभ्यता का पुजारी था। अति सुख सुविधाओं ने शासकों को आलसी, विलासी तथा कर्तव्यहीन बना दिया। जैसा राजा वैसी प्रजा। भारत की साख देश और विदेश में धीरे-धीरे कम होती गई।

यू.पी.ए.सरकार के अन्तिम वर्षों के कार्यकाल को यदि पूर्ण अराजकता का काल कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। कानून व्यवस्था चरमराने लगी, नारी की अस्मिता तार-तार होने लगी। रक्षक भक्षक बन गये। भ्रष्टाचार, अत्याचार व्यभिचार, लूटमार, झूठ, फरेब, पाखण्ड आदि जन-जीवन के मुख्य अंग बन गये। मिलावट व जमाखोरी के कारण महंगाई ने लोगों की कमर तोड़ दी। शायद हम भटक गए। रामराज्य की कल्पना करते-करते रावण राज्य की स्थापना कर बैठे। रावण भी सोने की लंका में रहता था फिर भी निशाचर राज कहलाता था। हमारे देश की भी कुछ ऐसी ही स्थिति हो गई थी। इस अराजकता की घोर काली अन्धकारमयी रात्रि में भारतीयों को कहीं दूर (गुजरात) से जुगनू की तरह टिमटिमाती आशा के प्रकाश की किरण दिखाई दी। सौभाग्य से २०१४ के लोकसभा के चुनाव ने देश की चौखट पर दस्तक दी। शाायद यह अवसर ईश्वरीय चमत्कार का शुभ संदेश था। इस अवसर पर रामचरित मानस की यह पंक्तियाँ याद आ जाती हैं-

जब जब होई धर्म की हानि, बाढ़े, असुर और अभिमानी।
तब तब प्रभु रचि अतिबीरा, हरहि सकल सज्जन की पीरा।।

चुनावी बिगुल बजा। सभी राजनैतिक दल अपने-अपने दल बल के साथ इस चुनावी घमासान में कूद पड़े। २०१४ का चुनाव कोई साधारण चुनाव नहीं था। सभी राजनेता अपनी वाणी के तीक्ष्ण बाणों से एक दूसरे को भेद रहे थे मानो विषैले साँपों की तरह एक दूसरे को डस लेंगे। ऐसा प्रतीत होता था कि इस बार चुनाव की बागडोर स्वयं ईश्वर ने सँभाल रखी थी। शक्ति का ध्रुवीकरण हुआ जो श्री नरेन्द्र मोदी जी का लक्ष्य बन गया। देश की सवा सौ करोड़ की जनसंख्या को यह अटूट विश्वास हो गया कि उनकी आशा का एकमात्र विकल्प 'यह कर्मठ लौह पुरुष' ही हो सकता है। ऐसा अनुभव होने लगा था कि भारती की आत्मा को स्वयं ईश्वर संचालित कर रहा हो। झुग्गी झोंपड़ी से लेकर राजधानी के महलों तक के मतदाताओं ने मानो एक निश्चित स्थान पर बैठकर श्री नरेन्द्र जी को अपना शासक बनाने का योजनाबद्ध दृढ़ संकल्प किया हो।

भारतीय चुनाव के आधार धर्म, जाति, साम्प्रदायिकता, गरीबी, अमीरी, शिक्षित व अनपढ़ता की सभी संकरी दीवारें धराशाही हो गईं। १६ मई २०१४ के चुनाव की परिणाम बेला उतनी सुहावनी प्रतीत हो रही थी जैसे १५ अगस्त १९४७ की प्रभात थी। वाराणसी में गंगा पूजन के दृश्य को देखकर ऐसा आभास हो रहा था कि सदियों के बाद आज भारतीय संस्कृति की नई किरण पुनः फूट पड़ी हो।

आज देशवासियों की महामहिम प्रधानमंत्री जी से बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं। जनता से उन्होंने बड़े-बड़े वादे भी किए हैं। राह अति कठिन है। हर कदम पर फूल नहीं शूल है। चारों ओर विरोधी हैं, संकट है परन्तु यह भी सत्य है कि आत्मविश्वास के साथ आप आसमान भी छू सकते हैं। ऐसा ही कुछ आत्मविश्वास आदरणीय मोदी जी में भी कूट-कूट कर भरा है। गंगा माँ की मैल तो धुल जायेगी परन्तु जनमानस की आत्माओं की कलुषता कैसे मिटेगी? यह एक यक्ष प्रश्न है। मन की मैल को धोए बिना कोई भी छोटा या बड़ा कार्य करना असंभव है। लोकतंत्र में जनशक्ति ही तो बड़ी शक्ति है।

जीवन में सफल व्यक्ति वह है जो दूसरे लोगों द्वारा फैंकी गई ईटों से एक मजबूत नींव बना लेते हैं। ऐसी कारीगरी में मान्यवर मोदी जी माहिर एवं निपुण हैं।

अगर हम भारत के भविष्य को उज्ज्वल बनाना चाहते हैं तो हमें आत्म निरीक्षण करना पड़ेगा। किसी भी शुभ कार्य को करने के लिए साहस की आवश्यकता होती है। परमात्मा ने हमें मनुष्य बनाया है तो शुभ मित्र भी बनाने चाहिए। हमारे पीछे पूरी ऋषि परम्परा है। शुभ बनने में देर न करें। जिन्दगी तो केवल अपने कन्धे पर जी जाती है। दूसरों के कन्धों पर तो जनाजे उठाये जाते हैं।

श्री रजत शर्मा जी की 'आप की अदालत' में मुसलमान भाईयों को मुसलमान भाईयों ने बड़ी अच्छी एवं सत्य बात समझाने का प्रयास किया है कि किसी भी चीज एवं हक को प्राप्त करने के लिए उचित पात्रता की आवश्यकता होती है। योग्य पात्र तो बनो पात्र स्वतः भर जायेगा।

श्री अक्षय कुमार एक्टर का एक वाक्य आज कल बार-बार दोहराया जा रहा है। 'यदि आतंकवादी दूसरों की हत्या के लिए जान कुर्बान कर सकते हैं तो क्या हम रक्षक दूसरों की रक्षा के लिए जीवन दान नहीं कर सकते।' यदि आज हम सब इन पंक्तियों को अपने जीवन में ढाल लें तो एक दूसरे के लिए जीने मरने की कसम खा लें तो मन और आत्मा रूपी गंगा की सफाई बड़ी सरलता से हो जायेगी क्योंकि मन ही तो प्रत्येक समस्या का विकल्प है। सत्य कहा है मन चंगा तो कठौती में गंगा।

वीर लोग लोहा गर्म होने की प्रतीक्षा नहीं करते वे तो अपनी कर्मठता रूपी हथौड़े की चोटों से लोहे को पिघला देते हैं परन्तु इस के विपरीत यहाँ आज लोहा गर्म है, परिस्थितियाँ अनुकूल हैं ईश्वर भी मेहरबान है। आओ हम सब सुअवसर का लाभ उठायें मिल जुल कर नव भारत का निर्माण कर वर्षों से संजोये स्वराज्य तथा सुराज्य के अपने सपने को साकार करें।

परमपिता सर्वशक्तिमान परमात्मा से प्रार्थना है कि प्रत्येक भारतीय के हृदय में सत्य एवं ज्ञान का दीप जले।

सौम्य अपार्टमेन्ट, फ्लैट नं. १०१
बी-९ ध्रुव मार्ग, तिलक नगर, जयपुर
चलभाष- ९४६०१८३८७२

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य — मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग — कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया — उपमंत्री-न्यास

एक विस्मृत हिन्दू सम्राट - महाराजा हेमचन्द्र विक्रमादित्य

विनोद बंसल

सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य, भारतीय इतिहास के उन चुनिन्दा लोगों में से हैं जिन्होंने इतिहास की धारा मोड़कर रख दी। वे पृथ्वीराज चौहान (११७८-११९२) के बाद इस्लामी शासनकाल के मध्य दिल्ली के सम्भवतः एकमात्र हिन्दू सम्राट हुए जो विद्युत की भाँति चमके और दैदीप्यमान हुए। उन्होंने अलवर (राजस्थान) के बिल्कुल साधारण से घर में जन्म लेकर एक व्यापारी, माप-तौल अधिकारी, 'दरोगा-ए-डाल चौकी', 'वजीर' (प्रधानमंत्री) और सेनापति होते हुए दिल्ली के तख्त पर राज किया और अपने अपार पराक्रम एवं २२ युद्धों में विजयी रहकर 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की। यह वह समय था जब मुगल एवं अफगान-दोनों ही दिल्ली पर राज्य के लिए संघर्षरत थे। यद्यपि हेमचन्द्र अधिक समय तक शासन न कर सके, तथापि इसे भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना अवश्य कहा जायेगा। हेमचन्द्र की तूफानी विजयों के कारण कई इतिहासकारों ने उनको 'मध्यकालीन भारत का नेपोलियन' कहा है।

जन्म तथा प्रारम्भिक जीवन

हेमचन्द्र, राय जयपाल के पौत्र और राय पूरणदास (लाला पूरणमल) के पुत्र थे। इनका जन्म ०२ अक्टूबर, १५०१ ई. को अलवर (राजस्थान) जिले के मछेरी नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता पहले पौरोहित्य कार्य करते थे, किन्तु बाद में मुगलों द्वारा पुरोहितों को परेशान करने के कारण कुतुबपुर, रेवाड़ी में आकर नमक का व्यवसाय करने लगे।

हेमचन्द्र की शिक्षा रेवाड़ी में आरम्भ हुई। उन्होंने संस्कृत, हिन्दी, फारसी, अरबी तथा गणित के अतिरिक्त घुड़सवारी में भी महारत हासिल की। साथ ही पिता के नये व्यवसाय में अपना योगदान देना शुरू कर दिया। अल्पायु से ही हेमचन्द्र, शेरशाह सूरी (१५४०-१५४५) के लश्कर को अनाज एवं बन्दूक चलाने में प्रयोग होने वाले प्रमुख तत्व पोटेशियम नाइट्रेट अर्थात् शोरा उपलब्ध कराने के व्यवसाय में पिताजी के साथ हो लिए थे। इसी बारूद के प्रयोग के बल पर शेरशाह सूरी ने हुमायूँ (१५३१-१५४० एवं १५५५-१५५६) को १७ मई, १५४० ई. को कन्नौज (बिलग्राम) के युद्ध में हराकर काबुल लौट जाने पर विवश कर दिया था। हेमचन्द्र ने उसी समय रेवाड़ी में धातु से विभिन्न तरह के हथियार बनाने के काम की नींव रखी, जो आज भी वहाँ पीतल, तांबा, इस्पात के बर्तन आदि बनाने के काम के रूप में जारी है।

शेरशाह सूरी

दिनांक २२ मई, १५४५ ई. को शेरशाह सूरी की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र जलाल खाँ ने इस्लामशाह सूरी के नाम से गद्दी सम्भाली और १५४५ से १५५४ तक दिल्ली पर शासन किया। पंजाब से बंगाल तक फैले हुए राज्य में अनेक अफगान-सरदारों ने मौके का लाभ उठाकर बगावत करनी चाही, लेकिन इस्लामशाह ने सबको पराजित कर दिया। इस्लामशाह ने एक प्रतिष्ठित व्यापारी की सिफारिश पर हेमचन्द्र को दिल्ली का बाजार-अधीक्षक बनाया और बाद में उन्हें खाद्य एवं आपूर्ति विभाग का अधीक्षक तथा 'दरोगा-ए-डाक चौकी' के महत्वपूर्ण पद पर आसीन कर दिया। सैन्य गतिविधियों, प्रशासन और जनसामान्य के बीच एक अविच्छिन्न सम्पर्क-सेतु बनाकर वह आम नागरिक से लेकर सुल्तान तक की प्रशंसा के पात्र बन गये। अनेक अफगान-सरदारों की अनिच्छा के बावजूद इस्लामशाह ने हेमचन्द्र को छः हजार सवारों की मुख्तियारी दी और 'अमीर' का खिताब दिया।

दिनांक २२ नवम्बर, १५५४ को ग्वालियर में अपनी मृत्यु के पूर्व इस्लामशाह ने पंजाब से हेमचन्द्र को बुलाकर उनको दिल्ली की सैनिक और प्रशासनिक व्यवस्था सौंप दीं। इस्लामशाह की मृत्यु के बाद उसका बारह वर्षीय पुत्र फिरोजशाह सूरी गद्दी पर बैठा, किन्तु वह कुछ ही महीने शासन कर सका। १५५४ में ही उसे शेरशाह के भतीजे मुहम्मद मुबारिज खान ने मौत के घाट उतार दिया और स्वयं आदिलशाह सूरी के नाम से १५५४ से १५५५ तक शासन किया। आदिलशाह एक घोर विलासी और लम्पट शासक था और शासन की बिल्कुल भी परवाह नहीं करता था। फलस्वरूप अनेक अफगान-अधिकारियों ने उसके विरुद्ध बगावत शुरू कर दी। विद्रोह को दबाने और राजस्व वसूली के लिए आदिलशाह ने हेमचन्द्र को ग्वालियर के

किले मे न केवल अपना 'वजीर' (प्रधानमंत्री) बनाया, वरन् अफगान सेना का सेनापति भी नियुक्त कर दिया। इस प्रकार हेमचन्द्र पर शासन का भार डालकर आदिलशाह ने चुनार (मिर्जापुर के पास) की राह पकड़ी। इस प्रकार सम्पूर्ण अफगान शासन हेमचन्द्र के हाथ में आ गया। अवसर पाकर हेमचन्द्र ने हिन्दू राज्य का स्वप्न देखा।

हुमायूँ, जो पहले १५४० ई. में शेरशाह सूरी द्वारा हराकर काबुल खदेड़ दिया गया था, ने दुबारा हमला करके शेरशाह सूरी के भाई सिकन्दर सूरी को पंजाब से हराकर जुलाई, १५५५ ई. में दिल्ली पर अधिकार कर लिया। उस समय अफगान-सरदार आपस में ही संघर्षरत थे। उत्तर भारत, मध्य भारत, बिहार और बंगाल तक उन्होंने अपने झण्डे बुलंद कर दिए। आदिलशाह के सबसे बड़े शत्रु इब्राहीम खान ने काल्पी में सिर उठा लिया था। तब आदिलशाह ने हेमचंद्र को बड़ी सेना और पाँच सौ हाथी तथा तोपखाना देकर आगरा और दिल्ली के लिये भेजा। जब हेमचंद्र काल्पी पहुँचे, तब उन्होंने निश्चय कर लिया कि पहले इब्राहीम को समाप्त किया जाए। इसलिए उन्होंने शीघ्रता से उसकी ओर कूच किया। एक बहुत बड़ी लड़ाई हुई, जिसमें हेमचंद्र विजयी हुए और इब्राहीम भागकर बयाना चला गया।

हेमचंद्र ने उनका पीछा किया और बयाना को घेर लिया। यह घेरा तीन महीने तक चलता गया। तभी हेमचंद्र को आदिलशाह का आदेश प्राप्त हुआ कि बंगाल के सूबेदार मुहम्मद खान गोरिया (१५४५-१५५५) ने विद्रोह कर दिया है। तब हेमचंद्र ने बंगाल की ओर कूच किया और आगरा से १५ कोस की दूरी पर छप्परघाट नामक गाँव के निकट मुहम्मद खान गोरिया से लड़ा जिसमें मुहम्मद मारा गया। इसके बाद हेमचंद्र ने बंगाल में अपने सूबेदार शाहबाज खान को नियुक्त किया। इसके ६ माह बाद दिल्ली में हुमायूँ की मौत (२७ जनवरी १५५६) का समाचार सुनकर समझ लिया कि अब हिन्दू राज्य के स्वप्न को साकार किया जा सकता है।

हेमचंद्र ने मुगल साम्राज्य को उखाड़ फेंकने के लिये दिल्ली की ओर कूच किया और ग्वालियर से निकलकर बंगाल, बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश व आगरा की कई रियासतों को जीतते हुए, २२ युद्ध लड़े।

दिल्ली पर विजय व राज्यारोहण

६ अक्टूबर १५५६ को हेमचंद्र ने अपने सभी सेना अधिकारियों, अनेक पठान योद्धाओं, ४० हजार घुड़सवारों, ५१ बड़ी तोपों और ५०० छोटी तोपों के साथ दिल्ली के कुतुब मीनार से सेकेंड मील दूर तुगलकाबाद में अपना डेरा जमाया। दिल्ली के सूबेदार तारदीबेग खान ने उनका मुकाबला करने का असफल प्रयास किया किन्तु उसे अपने लगभग ३ हजार मुगल सैनिकों, अपार धन संपत्ति, १ हजार अरबी घोड़े तथा लगभग १५ सौ हाथियों से हाथ धोना पड़ा और स्वयं जान बचाकर भागना पड़ा।

अगले ही दिन ७ अक्टूबर १५५६ को दिल्ली के पुराने किले में अफगान और हिंदू सेनानायकों के सान्निध्य में पूर्ण हिंदू धार्मिक विधि से उनका राज्याभिषेक हुआ और उन्हें विक्रमादित्य की उपाधि से विभूषित किया गया। ३६४ वर्षों के मुगल शासन में पहली बार किसी हिंदू शासक ने गद्दी संभाली थी।

हुमायूँ की मृत्यु के पश्चात् उसके १४ वर्षीय पुत्र अकबर (१५५६-१६०५) को उसके कई सेनापतियों व संरक्षक बैरम खान ने हेमचंद्र से युद्ध करने के लिए प्रेरित किया। ५ नवंबर १५५६ को पानीपत में हुए इस युद्ध में अकबर और बैरम खान ने स्वयं युद्ध में भाग नहीं लिया और युद्ध क्षेत्र से ८-१० किलोमीटर दूर सौंधापुर गाँव स्थित शिविर में ही रहे जबकि हेमचंद्र ने स्वयं अपनी सेना का नेतृत्व किया। एक ओर हेमचंद्र की सेना में लाखों सैनिक, १५०० सुरक्षा कवच धारी हाथी योद्धा व धनुर्धर थे तो वहीं दूसरी ओर मुगल सेना में कुल २० हजार अश्वारोही सैनिक ही थे। अकबर की सैन्य टुकड़ी की कूट नीतिक चालों ने एक बार तो हेमचंद्र के सैनिकों को तोपें छोड़ मैदान से भागने पर विवश कर दिया किन्तु जब हेमचंद्र स्वयं हाथियों के साथ आगे बढ़े तो मुगल सेना का बायां पक्ष हिल उठा था। 'हवाई' नामक एक विशाल हाथी पर सवार होकर सैन्य संचालन कर रहे हेमचंद्र ने ताबड़तोड़ तीरों की जो बौछार की उससे मुगल सेना भयभीत हो चुकी थी। इसी बीच वे भी शत्रुओं के तीरों से घायल तो थे किन्तु सहसा एक तीर उनकी आँखों को चीरता हुआ मस्तिष्क में घुस गया और वे मूर्छित होकर हौदे में गिर पड़े। हेमचंद्र के गिरने की सूचना मात्र से उनके सैनिक बुरी तरह भयभीत होकर युद्ध क्षेत्र से भाग खड़े हुए और अकबर को बैठे बिठाए निर्णायक सफलता प्राप्त हो गई। बाद में उनके मृत प्रायः शरीर को शाह कुली खान अनेक सैनिकों के साथ अकबर के समक्ष ले गया जहाँ स्वयं बैरम खान ने अकबर के ही समक्ष उनके टुकड़े-टुकड़े कर सिर को काबुल में और धड़ को दिल्ली में बेरहमी से दरवाजों पर लटकवा दिया। इतना ही नहीं दोबारा कोई

विद्रोह न कर सके इसलिए अकबर ने हेमचंद्र के सैनिकों और शुभचिंतकों के हजारों कटे सिरों का बुर्ज बनाया, उनकी संपत्ति पर कब्जा कर उनके पिता राय पूरणदास के भी टुकड़े-टुकड़े कर डाले और उनका कुल नष्ट करने के लिए अलवर, रेवाड़ी, नारनौल, आनौड़ आदि क्षेत्रों में बसे हुए उनके सहयोगियों को चुन-चुनकर बंदी बनाया गया। अनेक इतिहास विदों, समाजसेवियों ने हेमचंद्र विक्रमादित्य की महान् राष्ट्र भक्ति, कुशल सैन्य संचालन का गुणगान करते हुए लिखा है कि चाहे उन्होंने मात्र एक महीने ही राज किया हो किन्तु जितना प्रभावशाली व्यक्तित्व उनका था वह भारतीय इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय है। संयोगवश उनकी और उनके हाथी की आँख में तीर लग जाने से अकबर की लॉटरी लग गई।

मध्यकालीन और आधुनिक इतिहासकारों ने हेमचंद्र विक्रमादित्य के प्रति न्याय नहीं किया तथा युद्धक्षेत्र की एक दुर्घटना ने उनकी विजय को पराजय में बदल दिया अन्यथा संभवतः युद्ध का परिणाम दिल्ली में मुगलिया सल्तनत स्थापित करने की बजाय संपूर्ण भारत में हिंदू साम्राज्य की आधारशिला के रूप में स्थापित होता।

३२९ संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली-६५
सपर्क . ९८१०९४९१०९

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रहलादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमल सूद, पाण्डाघाट, श्रीमती सुमन सूद, सोलन, माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) अवश्य खरीदें।

मात्र ४० ₹

प्राप्ति स्थल
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाबबाग उदयपुर - ३१३००१

सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएँ-

- धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
- पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
- मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
- मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
- सुन्दर गेटअप ''५.६X९.०'' पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी।
आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०
३५०० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

उपहार स्वरूप कलैण्डर देने की तिथि बढ़ाई गई

दिसम्बर १४ तक सत्यार्थ सौरभ के आजीवन सदस्य बनने वालों को १००रु. मूल्य का, शानदार कैलेण्डर उपहार स्वरूप दिया जावेगा (डेढ़ वर्षीय, सम्पूर्ण ऋषि-गाथा को चित्रित करने वाला)। यह शानदार कैलेण्डर न्यास संरक्षक डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (शिकागोलैण्ड) के सौजन्य से तैयार किया गया है।

वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

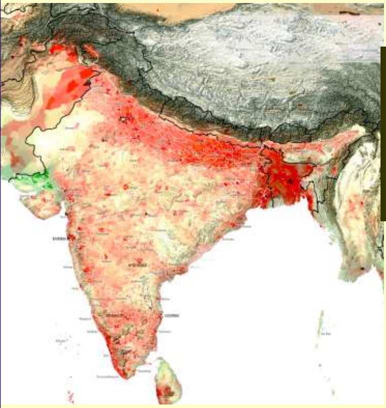

ऐसे बन सकता है 'अखण्ड भारत'

ज्ञात इतिहास में भारत का सबसे छोटा मानचित्र आज है। आज हमारे भारत की सीमाएँ जितनी सिकुड़ चुकी है वैसा अब तक पहले कभी नहीं हुआ है। गत कुछ ही सहस्र वर्ष में भारत का ज्ञान, विज्ञान, शिक्षा, समृध्दि और शक्ति में पतन होता रहा और हमारी सीमाएँ भी सिकुड़ती गईं।

आज कोई आशावादी व्यक्ति जब यह कहता है कि अतीत में खोए हुए वैभव को फिर से प्राप्त करके हमें वेदाज्ञा का पालन करना है तो सामान्य बुध्दि वाले को तो समझ में ही नहीं आता है। उसे या तो ये बात शेखचिल्ली के ख्वाब अर्थात् मुंगेरी लाल के हसीन सपने जैसी दिखती है या वह इसे असंभव समझ कर संतोष कर लेता है। मूर्ख, धूर्त और देशद्रोही व्यक्ति इस बात का मजाक उड़ाएगा या विरोध करेगा। सामान्य व्यक्ति जो देखता है उसे ही सत्य समझता है। उसे ज्यादा आगे का नहीं दिखता। यदि वह कुछ परिवर्तन देख लेता है तो स्वीकार कर लेता है फिर भी दूरदृष्टि का विकास उसमें नहीं हो पाता। उसका प्रश्न होता है पाकिस्तान जैसे दुश्मन देश का भारत में विलीन होना और फिर शांति से प्रेम भाव से रहना कैसे संभव हो सकता है? असंभव। एक तरफ तो तुम विदेशी बांग्लादेशियों को भारत से निकालने की बात कर रहे हो और दूसरी तरफ भारत में बांग्लादेश को विलय करे, इतनी बड़ी गरीब आबादी को भारत में?

हाँ मेरे भाई! दिल साफ हो, आगे बढ़ने की चाहत हो तो बहुत कुछ संभव है। सबसे पहले तो हमें चहुँमुखी विकास करना होगा। सभी देशों को पीछे छोड़ते हुए हमें कृषि, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, सैन्यबल, व्यापार, पर्यटन, खेल, मनोरंजन, शोध, अन्तरिक्ष, अनुसंधान, पर्यावरण, कला कौशल, जीवनस्तर, न्याय आदि सभी क्षेत्रों में चरमोत्कर्ष को प्राप्त करना पड़ेगा।

देश को आगे बढ़ाने के लिए प्रत्येक नागरिक को राष्ट्रवादी होना होगा अर्थात् यह देश किसी और का नहीं यह मेरा देश है। यह मेरा अपना देश है इसकी प्रगति ही मेरी प्रगति है। देश का नुकसान ही मेरा नुकसान है। हमारा जो भी कर्तव्य कर्म है पूरी निष्ठा से करें। एक-एक व्यक्ति चाहे वो अध्यापक हो, व्यापारी हो, कार्यालय का बाबू हो या और कोई भी हो अपने कर्म को राष्ट्राराधना समझ कर करते हुए सन्तुष्ट हो।

ऐसा राष्ट्रभाव प्रत्येक में भरने के लिए हमारी शिक्षा नीति सर्वप्रथम बदलनी नितान्त आवश्यक है। हमारी शिक्षा ऐसी हो जो हमें पूर्ण ईमानदार ,कर्तव्यपरायण, राष्ट्र को समर्पित, आध्यात्मिक और उत्साहित बनाए। प्रान्तवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद का भारत से शिक्षा और कानून द्वारा पूरी तरह निर्मूलन करना भी नितान्त आवश्यक है। शिक्षा द्वारा ही आत्मोत्थान के लिए योग और अध्यात्म समझाने, अभ्यास कराने की भी पूरी व्यवस्था होनी चाहिए ताकि भारत के हर नागरिक का भारत में जन्म लेना सार्थक हो। मानव शरीर में जन्म लेना भी सार्थक हो। अन्यथा गधे, बैल और हमारे में फर्क ही क्या? इस तरह भारत की आत्म से सुपरिचित नस्ल पैदा हो जायेगी। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का पुरुषार्थ व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं रहकर राष्ट्रीय स्तर पर चरितार्थ होगा। तब इस देश को प्रगति करने में देर नहीं लगेगी।

हाँ वर्तमान का हमारा आपसी कलह आड़े आ सकता है। आज हमने अपने ईश्वर, अल्लाह और गॉड को ही आपस में लड़ा रखा है ओर वे तीनों हमारे कहे कहे लड़ते ही जा रहे हैं। उन्हें और उत्साह देने को हम हूटिंग, नारेबाजी भी बाकी सब काम धन्धा छोड़के बड़ी जोर की कर रहे हैं।

पत्थर, लाठी, सीरियल बम ब्लास्ट, आगजनी आदि से हमारा ईश्वर, हमारा अल्लाह और हमारा गॉड भी लहूलुहान हो गया है। दया करो उस पर। अब तक बहुत हो

गया। अब इन्हें अपने अपने मंदिरों में मस्जिद में और चर्च में शांति से बैठने दो। हमने इन्हें और लड़ाया और इनमें से कोई मर गया तो फिर हमारा कौन? मजाक नहीं कर रहा हूँ सच कह रहा हूँ। हम सबने बहुतों के अल्लाह, ईश्वर को मरते देखा है। जब उनका मालिक मर गया तो फिर वे नास्तिक हो गए। नास्तिक होना भी अपने आप में बड़ा दर्द भरा होता है। नास्तिक एक कम उम्र विधवा सा बेचैन हो कर ताउम्र छटपटाता ही रहता है। एक देश का भगवान तो इतना लड़ा इतना लड़ा कि पूरे देश को ही नास्तिक होना पड़ा। बेचारा चीन।

इस समस्या का हल महर्षि दयानन्द नियम बनाकर देके गए हैं। 'सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।' इस नियम पर मनन करने पर एक स्वतंत्र देश की पूरी अवधारणा स्पष्ट हो जाती है।

कोई स्वयं के लिए बुर्का पहनना हितकारी समझता है तो अवश्य पहने वह स्वतंत्र है और किसी सम्प्रदाय का साधु दिगम्बर रहना चाहता है तो भी रहे। बस हम अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं के लिए, निजी व्यक्तिगत हितकारी नियम पालने में पूरी तरह स्वतंत्र रहे। ध्यान रखें स्वहित के लिए भी विवेक का प्रयोग करना ठीक रहता है।

भारत भाषा, संस्कृति और धर्म के दृष्टिकोण से एक समृद्ध देश है। भारत की इन धरोहरों की रक्षा करना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है। अर्थात् भारत के सभी नागरिक अपने-अपने सम्प्रदायों को मानने, अपनी इबादत या पूजा पद्धति को अपनाने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र रहें और राष्ट्रहित में सब लोग एक मन से समर्पित भाव रखें। ऐसा होते ही हमारा राष्ट्र तीव्र गति से प्रगति करता हुआ एक समृद्ध देश हो जायेगा। हम भूख, अभाव, बेरोजगारी,

बेईमानी, असुरक्षा से मुक्त हो जायेंगे।

जिस समय भारत कृषि, व्यापार, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, अध्यात्म, कला और सैन्य बल के दृष्टिकोण से पूर्ण समृद्ध देश बन जायेगा। यहाँ का प्रत्येक नागरिक समृद्ध, सन्तुष्ट और प्रसन्न होगा और हमारे पडोसी देश दरिद्रता से जूझ रहे होंगे तब भारत का नैतिक कर्तव्य भी बन जाता है कि पड़ोसी देशों की जनता को भी हमारी तरह पूर्ण उन्नत और समृद्ध बनाएँ। हमारे पड़ोसी देश आज हमारे से वैमनस्य रख रहे हैं कल हमारे समृद्ध होते ही ये ही हमारे परममित्र भी बन जायेंगे। हमें अपने पड़ोसी देशों को प्रेम से समझाना होगा कि हम एक ही थे आओ मिलकर हम फिर से एक हो जाएँ। जब एक विकसित, धनाढ्य, समृद्ध देश एक गरीब देश, विकासशील देश को यह एकता का प्रस्ताव रखेगा तो क्यों कोई नकारेगा? इसमें हमें आध्यात्मिक दृष्टिकोण वाली कुशल विदेश नीति प्रयोग करनी होगी न कि दमनकारी साम्राज्य विस्तार नीति। संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप भारत वर्ष ही था। हमें कोई साम्राज्य विस्तार नहीं करना है। भारत माता को अपने सही स्वरूप में लाना है। इसके बिछुड़े पुत्रों को मिलाना है।

विश्व इतिहास गवाह है कि विकास और समृद्धि के साथ देशों के नक्शे भी बड़े हो जाते हैं और अन्तर्कलह और दरिद्रता से देश टूट जाते हैं और एक ही देश के टूटे टुकड़े विशेष शत्रुता रखते हैं। यदि भारत को शांति से जीना है विश्व को भी शांति का मार्ग बताना है तो 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' की वेदाज्ञा का पालन करना होगा, अखण्ड भारत बनाना होगा।

जय हिन्द। जय भारत।

गिरीश त्रिवेदी
४९६-शनिवार पेठ,
झलिना अपार्ट, पूणे ४११०३०

पूज्य स्वामी (डॉ.) ओम् आनन्द सरस्वती अधिष्ठाता, पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल, चित्तौड़गढ़ ने सत्यार्थ प्रकाश सहयोग निधि में १०००० (दस हजार) रुपये का योगदान दिया है। न्यास की ओर से पूज्य स्वामी जी का हार्दिक आभार।

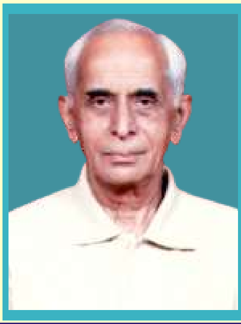

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को संबल प्रदान करने हेतु श्री पूर्ण सिंह डबास, नई दिल्ली ने संरक्षक सदस्यता (रु. ११०००) ग्रहण की है। अनेकशः धन्यवाद

भारतीयों के विदेशों में जमा काले धन को किस प्रकार राष्ट्रीय कल्याण में वापस लाया जाए?

– प्रदीप बत्रा

अभी हमारे देश ने स्वतंत्रता दिवस की ६५ वीं वर्षगाँठ मनाई है (सन् २०११ में), किसी देश में स्वतंत्रता दिवस की वर्षगाँठ एक औपचारिक रस्म नहीं होती है, बल्कि यह एक ऐसा महत्वपूर्ण अवसर होता है जब देश और देश की जनता अपने स्वतंत्रता के सफर का मूल्यांकन इस दृष्टि से करती है कि उसने इस स्वतंत्रता के सफर में क्या खोया और क्या पाया? हमारे देश में स्वतंत्रता के बाद कृषि, उद्योग, परिवहन, संचार, विज्ञान और तकनीक जैसे विभिन्न क्षेत्रों में निरन्तर प्रगति तो हुई है, परन्तु इसके समानान्तर देश की जनता जहाँ गरीबी, भूख और बेरोजगारी जैसी समस्याओं से जूझती दिख रही है तो वहीं यह दृश्य भी बिल्कुल साफ है कि आज हमारे लोकतंत्र के सामने भ्रष्टाचार और काले धन की चुनौती भयावह रूप लेती जा रही है।

हमारे देश के विदेशों में जमा काले धन को राष्ट्रीय कल्याण में किस प्रकार से वापस लाया जा सकता है इस संबंध में विषय प्रवेश के पूर्व यह जानना नितान्त आवश्यक है कि काला धन क्या है? हमारे देश का कितना काला धन है? यह काला धन किन देशों की बैंक में जमा है? देश में काले धन की वापसी के क्या प्रयास किए गए हैं? देश और देश के विकास पर काले धन का क्या प्रभाव पड़ता है? और देश के काले धन को राष्ट्रीय कल्याण में किस प्रकार से वापस लाया जा सकता है?

किसी देश में काले धन को इस तरह से परिभाषित किया जा सकता है कि यह देश का वह धन होता है जिसे अवैध रूप से अर्जित कर अपनी सरकार से छिपाकर विदेशों में जमा किया जाता है। 'राजा चेलैया समिति के अनुसार 'किसी अर्थव्यवस्था में काला धन वह पैसा है जिसका लेन-देन परिवारों और कालाबाजारियों के द्वारा जान बूझकर खाता बही से दूर रखा जाता है' इस प्रकार से स्पष्ट है कि काले धन को उस देश में भ्रष्टाचार के द्वारा या टैक्स चोरी के द्वारा अर्जित किया जाता है जिससे उस देश को राजस्व का नुकसान होता है, यही कारण है कि किसी देश में काले धन से उस देश विशेष की अर्थव्यवस्था पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

अभी हाल ही में स्विस बैंकिंग एसोसिएशन की रिपोर्ट में यह कहा गया है कि भारतीयों ने सन् १९४७ से अब तक १८९१ अरब डॉलर (८५०९५० करोड़ रुपए) स्विस बैंकों में जमा कराए हैं। चूँकि आज भारतीय अर्थव्यवस्था के दो चेहरे हैं- विकसित भारत और पिछड़ा भारत। इस कारण विकसित इण्डिया की बहुत छोटी सी आबादी इस काले धन की मात्रा का अनुमान जरूर लगा सकती है, परन्तु पिछड़े भारत की बड़ी आबादी इसका अनुमान नहीं लगा सकती है, क्योंकि आज भी उसके जीवन में दो जून की रोटी का कड़ा संघर्ष है, उसे इस काले धन के बारे में इस तरह से बताया जा सकता है कि यदि भारतीयों के स्विस बैंकों में जमा १८९१ अरब डॉलर (८५०९५० करोड़ रुपए) को १००० रु. के नोटों में बदलकर इसे एक सिरे से धरती से बिछाना शुरू किया जाए तो इससे संपूर्ण धरती की ३७ बार परिक्रमा की जा सकती है। इस संबंध में भ्रष्टाचार पर नजर रखने वाली संस्था 'ग्लोबल फाइनेन्शियल इंटीग्रिटी' की सर्वे रिपोर्ट का उल्लेख भी प्रासंगिक होगा जिसके अनुसार भारत में वर्ष १९४८ से २००८ की समयावधि में लगभग २०७९००० करोड़ रुपए अवैध तरीके से देश से बाहर भेजे गए हैं। हमारे देश का यह काला धन स्विट्जरलैण्ड, लक्जेमबर्ग, लिचटेंस्टटीन, चैनेल, आईलैण्ड और बहामासा जैसे विभिन्न देशों की बैंकों में जमा हैं।

हमारे देश के काले धन की स्थिति के संबंध में स्विस बैंक के आँकड़े यह बताते हैं कि वर्ष २००८ में स्विस बैंकों में भारत के ३.० अरब डॉलर, वर्ष २००९ में २.७ अरब डॉलर और २०१० में २.५ अरब डॉलर जमा थे, स्विस नेशनल बैंक के अध्यक्ष के प्रवक्ता वाल्टर मीयर के अनुसार भारतीय व्यक्तियों, वित्तीय संस्थाओं और कॉर्पोरेट्स के लगभग २.१ अरब डॉलर बचत और डिपोजिट्स के रूप में बैंकों में जमा हैं, जबकि शेष ४० करोड़ डॉलर उनके विश्वस्तों के नाम पर जमा हैं। भारत के काले धन के सम्बन्ध में स्विस बैंकों के आँकड़े यह भी बताते हैं कि पिछले ३ वर्षों में भारतीयों ने इन बैंकों से ५० करोड़ डॉलर (२२५० करोड़ रुपए) की धनराशि निकाली है और उनके द्वारा यह धन मिडिल ईस्ट, सिंगापुर और मॉरीशस जैसे देशों में हस्तान्तरित किया जा रहा है।

अभी तक दुनिया में स्विट्जरलैण्ड एक ऐसा देश है जिसने काले धन के हब सेन्टर के रूप में अपनी पहचान बनाई है। दुनिया में टैक्स चोरों की पनाहगार माने जाने वाले स्विस बैंकों के कारण ही स्विट्जरलैण्ड की अर्थव्यवस्था फल फूल रही है। दुनिया में काले धन के समाचार तब सुर्खियाँ बने जब स्विटजरलैण्ड में प्रकाशित 'श्वेजर इलस्टेर' नामक पत्रिका ने रूसी खुफिया एजेन्सी के.जी.बी के हवाले से अपने १९

नवम्बर १९९१ के अंक में इस आशय का संपूर्ण ब्यौरा प्रकाशित किया कि दुनिया के एक दर्जन से अधिक राजनीतिज्ञों और अन्य लोगों के घूसखोरी की धनराशि स्विस बैंक में जमा है। इसी रिपोर्ट के आधार पर ७ दिसम्बर १९९१ को तत्कालीन सांसद अमल दत्ता ने इस मामले को संसद में उठाया। भारत के उच्चतम न्यायालय में वर्ष २००९ में वरिष्ठ अधिवक्ता रामजेठ मलानी और अन्य ने काले धन के संबंध में याचिका दायर की, देश के उच्चतम न्यायालय ने कई बार सरकार को इस संबंध में त्वरित कार्यवाही करने के लिए कहा और अन्ततः उच्चतम न्यायालय ने जुलाई २०११ में केन्द्र सरकार को आड़े हाथों लेकर उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश बी.पी.रेड्डी और एम. बी.रेड्डी के नेतृत्व में विशेष जाँच दल, एसआईटी का गठन कर दिया है जिसमें आईबी और रॉ के मुखिया भी शामिल होंगे। इसी बीच जर्मनी सरकार ने विभिन्न देशों के नागरिकों की ओर से लिंचटेंस्टीन बैंक के गैरकानूनी धन के बारे में सूचनाएँ एकत्र कर उसे सार्वजनिक कर किसी भी इच्छुक सरकार को उनके देश के खाताधारकों के नाम उपलब्ध कराने का प्रस्ताव रखा। इसी वक्त मीडिया रिपोर्टों के हवाले से यह भी कहा गया कि २५० भारतीयों के नाम लिंचटेंस्टीन बैंक के खाताधारकों की सूची में हैं। भारत में काले धन के मुद्दे के खिलाफ जनाक्रोश बनने से सरकार ने जर्मनी से संधि कर काले धन के संबंध में खाताधारकों के नाम की जानकारी माँगी है।

हमारे देश में काले धन की उत्पत्ति का मूल कारण भ्रष्टाचार है। इस कारण भ्रष्टाचार और काले धन का एक दूसरे से गहरा जुड़ाव है। हमारे संविधान के अनुसार देश में लोकतंत्र के रूप में जनता का शासन है। लेकिन यह शासन चुनाव के समय तक ही सीमित रहता है। क्योंकि देश में चुनावों के बाद जनता की शक्ति उन नेताओं के हाथों में चली जाती है, जिनके लिए जनता की शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास और रोजगार जैसे मुद्दे राजनीति और भ्रष्टाचार की विषय वस्तु होते हैं। ट्रान्सपेरेन्सी इन्टरनेशनल ने अपनी रिपोर्ट में भारत को दुनिया के १७८ भ्रष्टतम देशों की सूची में ८७ वें स्थान पर रखा है। इस रिपोर्ट में भारत के राजनैतिक दलों को सबसे अधिक भ्रष्ट बताया गया है। इस रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि भारत में राजनैतिक और प्रशासनिक स्तर पर चल रहे भ्रष्टाचार के अलावा भारत में गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाली जनता को अपनी ११ चुनिन्दा बुनियादी सेवाएँ हासिल करने के लिए एक वर्ष में ९०० करोड़ रुपए की रिश्वत देनी पड़ती है।

हमारे देश में स्वतंत्रता के बाद भ्रष्टाचार और काले धन ने देश और देश की जनता के विकास को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है। हमारे देश की राजनीति को भ्रष्टाचार और काले धन का अभिशाप नहीं लगा होता तो निश्चित ही आज दुनिया में भारत का परिचय एक विकसित देश के रूप में होता।

इस संबंध में संक्षिप्त ब्यौरा निम्नानुसार है-

१. आज हमारे देश में अर्थव्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए सरकार को प्रतिवर्ष ३ लाख करोड़ रुपए का ऋण लेना पड़ता है। विदेशों में जमा काले धन की वापसी से देश को अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक से ऋण लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

२.हमारे देश में नेताओं के द्वारा भ्रष्टाचार की गई धनराशि से देश के गाँवों को सड़क से जोड़ा जा सकता था। देश की हर तहसील में माध्यमिक स्कूलों की स्थापना की जा सकती थी और प्रत्येक जिले में एक आधुनिक सुविधा सम्पन्न अस्पताल का निर्माण किया जा सकता था।

३. हमारे देश में केन्द्रीय बजट में २०१०-११ में शिक्षा के लिए ३१०३६ करोड़ रुपए स्वास्थ्य के लिए २२३०० करोड़ रुपए और नरेगा के लिए ४०१०० करोड़ रुपए की धनराशि का बजट निर्धारित किया था। हमारे देश की अर्थव्यवस्था यदि भ्रष्टाचार से मुक्त हो जाए तो शिक्षा स्वास्थ्य और रोजगार जैसे मुद्दों पर यह बजट कई गुणा तक बढ़ाया जा सकता है।

४. ग्लोबल फाइनेंशियल इंटीग्रिटी की सर्वे रिपोर्ट के अनुसार भारत में वर्ष १९४८ से २००८ की समयावधि में लगभग २०७९००० करोड़ रुपए अवैध तरीके से देश से बाहर भेजे गए हैं। इस धनराशि से यूपीए १ के कृषि ऋण माफी योजना को ३५ बार लागू किया जा सकता था।

५. भारत में वर्ष २००८ में काले धन का आकलन २८ लाख करोड़ रुपए किया गया था। यह भारत के विदेशी ऋण का दोगुना है। इससे प्रत्येक भारतीय को १४००० रु. मिल सकते थे।

६. हमारे देश के स्विस बैंकों में जमा धन से देश के करोड़ों बेरोजगारों के लिए रोजगार पैदा कर रोजगार समस्या का काफी हद तक समाधान किया जा सकता था।

७. अभी हाल ही में एक अमरीकी एक्सपर्ट के द्वारा अपनी रिपोर्ट में यह खुलासा किया गया है कि भारतीयों के स्विस बैंकों में जमा धन के ५० प्रतिशत भाग से देश के प्रत्येक भारतीय को तीस साल तक लगातार लगभग दो हजार रु. दिया जाना संभव है।

८. हमारे देश के भारतीयों के स्विस बैंकों में जमा धन की वापसी संभव हो जाए तो इससे देश का बजट बिना टैक्स के ३० वर्ष तक के लिए बनाया जा सकता है।

९. अभी हाल ही में २ जी स्पेक्ट्रम के कारण सरकार को जितना नुकसान हुआ है उससे देश भर में १-१ मेगावाट के ८८०० करोड़ सौर उर्जा संयंत्र लगाकर समूचे भारत में कई वर्षों तक बिजली की सप्लाई हो सकती थी।

हमारे देश में भ्रष्टाचार और काला धन एक ऐसी समस्या है जिससे देश की अर्थव्यवस्था को चुनौती मिल रही है। इससे जहाँ देश के विकास में बाधा पहुँच रही है तो वहीं देश की जनता की खुशहाली का मार्ग भी अवरुद्ध हो रहा है। हमारे देश में काले धन की समस्या देश के विकास की बेड़ी है तो वहीं यह भयावह समस्या देश के जनता की खुशहाली का ग्रहण भी है। इस दृष्टि से देश की विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका को एकमत होकर देश के काले धन की वापसी के प्रयास करने चाहिए और इस कालेधन को राष्ट्रीय कल्याण में समर्पित कर दिया जाना चाहिए। इस संबंध में निम्न उपाय कारगर हो सकते हैं-

१.विदेशों में जमा काले धन की वापसी के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष २००३ में एक संकल्प तैयार किया था। इस संकल्प पर भारत ने वर्ष २००५ में हस्ताक्षर तो किए हैं, परन्तु इसे सत्यापित नहीं किया है। स्विट्जरलैण्ड के कानून के अनुसार देश के इस संकल्प पर हस्ताक्षर के वगैर वह काले धन की वापसी के संबंध में कार्यवाही नहीं कर सकता है। अतः सर्वप्रथम तो भारत को इस संकल्प पर हस्ताक्षर करने की दिशा में पहल करनी चाहिए।

२. हमारे देश में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका को पूर्णतः लोकपाल के दायरे में लाया जाना चाहिए। देश में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका की सर्वोच्च शक्तियों के लोकपाल के दायरे में आने से काले धन की वापसी के मार्ग की बाधाएँ समाप्त होंगी।

३. हमारे देश में भ्रष्टाचार के कारण करोड़ों अरबों की धनराशि स्विस बैंक में जमा है। अभी हाल में जर्मन वित्त मंत्रालय ने दुनिया के किसी भी देश की इच्छुक सरकार को उनके देश के खाताधारकों के नाम उपलब्ध कराने का खुला प्रस्ताव रखा। परन्तु भारत सरकार ने कर संधि के प्रावधानों के अनुसार यह जानकारी चाही जिसमें खाताधारकों का नाम गुप्त रखा जाता है। इस दिशा में न्यायपालिका को सरकार के लिए उचित निर्देश पारित करने चाहिए।

४. हमारे देश की सरकार को स्विटरजरलैण्ड, लक्जेमबर्ग, लिंचटेंस्टीन, चैनेल, आईलैण्ड और बहामास जैसे विभिन्न देशों से इस प्रकार की संधियाँ करनी चाहिए कि इन देशों की बैंकों के द्वारा भारतीय खाताधारकों के नाम गुप्त नहीं रखे जायें बल्कि इन भारतीय खाताधारकों के द्वारा जब भी इनके खातों में धनराशि जमा की जाए या फिर निकाली जाए उसकी जानकारी भारत सरकार को तत्काल दी जाए।

५. हमारे देश के मीडिया एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों के द्वारा सरकार पर यह दबाव बनाया जाना चाहिए कि उसके द्वारा भारतीयों के स्विस बैंकों में जमा धन का खुलासा किया जाए और उनकी वापसी के प्रयास किए जाएँ।

६. हमारे देश में भ्रष्टाचार और काले धन के नियंत्रण के लिए एक ऐसा कानून प्रभाव में लाया जाना चाहिए कि यदि किसी भारतीय के द्वारा दुनिया के किसी भी देश की बैंक में भ्रष्टाचार या टैक्स चोरी के धन को जमा कराया जाता है तो उनके उस खाते विशेष की संपूर्ण राशि जब्त कर उसे राष्ट्रीय कल्याण में लगाया जाएगा।

७. हमारे देश में भ्रष्टाचार पर नजर रखने के लिए सी.ए.जी, सी.बी.आई. और सेन्ट्रल विजिलेंस कमीशन जैसी संस्थाएँ हैं, इन्हें काले धन की जाँच के लिए इस प्रकार के अधिकार दिए

जाने चाहिए कि इनके द्वारा अपनी जाँच और अन्वेषण में विदेशी बैंकों से भारतीय खाताधारकों के काले धन के संबंध में उचित जानकारी ली जा सके।

८. हमारे देश में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका में भ्रष्टाचार में लिप्त व्यक्तियों के काले धन की वापसी के लिए एक विशेष कानून लागू किया जाना चाहिए। इस कानून के तहत उन्हें यह अवसर दिया जाना चाहिए कि उनके द्वारा अपने काले धन की एक निर्धारित समयावधि के भीतर खुलासा कर उस धनराशि के पचास प्रतिशत भाग को देश में जमा किया जाए अन्यथा इस कानून के अनुसार उन पर भ्रष्टाचार के बजाय देशद्रोह का मामला पंजीकृत किया जाना चाहिए। इसमें सख्त सजा के साथ-साथ मृत्युदंड का प्रावधान भी रखा जाना चाहिए जिससे देश में भ्रष्टाचार और काले धन के खिलाफ सामाजिक भय का वातावरण बने।

हमारे देश ने स्वतंत्रता का लम्बा सफर पूर्ण कर लिया है फिर भी यह दु:खद नवीनतम आँकड़े सामने हैं कि भारत में ४५ करोड़ लोगों की आमदनी ४४७ रु प्रतिमाह है। जबकि ८० करोड़ लोग प्रतिदिन बीस रु. कमाते हैं सिर्फ यही नहीं हमारे देश में २५ करोड़ लोग रोज भूखे सोते हैं। यहाँ पर हर तीसरा आदमी भूखा नंगा है। यहाँ भूख से नहीं बल्कि प्यास से भी मौत होती है। यहाँ किसानों की आत्महत्या की दर सबसे ज्यादा है। यहाँ कुपोषित शिशु मृत्यु दर सबसे ज्यादा है और यहाँ गर्भ और प्रसव संबंधी सुविधाओं के अभाव में महिला मृत्यु दर सबसे ज्यादा है। देश और देश की जनता से जुड़ी इन समग्र परिस्थितियों के प्रकाश में देश में काले धन की वापसी के मुद्दे को बहुत गंभीरता से लिए जाने की जरूरत है, क्योंकि इससे देश और देश की जनता के जीवन की तस्वीर बदली जा सकती है। {**सौभाग्य से मोदी सरकार इस दिशा में दृढ़ प्रतिज्ञ है तथा पहल भी हो चुकी है। -संपादक**}

साभार- प्रतियोगिता दर्पण

दया की आँखें खोल देख लो

गर्व था भारत-भूमि को कि दयानन्द की माता हूँ,
राम-कृष्ण और हनुमान जैसे वीरों की यशगाथा हूँ।।
कंद-मूल खाने वालों से मांसाहारी डरते थे,
पोरस जैसे शूर-वीर को नमन 'सिकंदर' करते थे।।
चौदह वर्षों तक वन में जिसका धाम था,
मन-मन्दिर में बसने वाला शाकाहारी राम था।।
चाहते तो खा सकते थे वो मांस पशु के ढेरो में,
लेकिन उनको प्यार मिला 'शबरी' के मीठे बेरो में।।
चक्र सुदर्शन धारी थे यज्ञ विरोधी पर भारी थे,
कंस असुर के विनाशक 'श्री कृष्ण' शाकाहारी थे।।
पर-सेवा, पर-प्रेम का परचम चोटी पर फहराया था,
निर्धन की कुटिया में जाकर जिसने मान बढ़ाया था।।
सपने जिसने देखे थे मानवता के विस्तार के,
नानक जैसे महा-संत थे वाचक शाकाहार के।।
उठो जरा तुम पढ़ कर देखो गौरवमयी इतिहास को,
ब्रह्मा से दयानन्द तक फैले इस नीले आकाश को।।
दया की आँखें खोल देख लो पशु के करुण क्रंदन को,
इंसानों का जिस्म बना है शाकाहारी भोजन को।।
अंग लाश के खा जाए क्या फिर भी वो इंसान है ?
पेट तुम्हारा मुर्दाघर है या कोई कब्रिस्तान है ?
आँखे कितना रोती हैं जब उंगली अपनी जलती है,
सोचो उस तड़पन की हद जब जिस्म पे आरी चलती है।।
बेबसता तुम पशु की देखो बचने के आसार नहीं,
जीते जी तन काटा जाए, उस पीड़ा का पार नही।।
खाने से पहले बिरयानी, चीख जीव की सुन लेते,
करुणा के वश होकर तुम भी शाकाहार को चुन लेते।।

प्रस्तुति- ज्ञान चन्द्र आर्य

माता प्रेमलता शास्त्री जी दिवंगत

आर्य समाज की अपूरणीय क्षति

वैदिक धर्म की धर्मोद्धारिणी माता प्रेमलता जी का जन्म सम्वत् सन् १९२६ को पाकिस्तान के मुल्तान नगर में श्री मुरलीधर जी के घर में हुआ। आप की शिक्षा दीक्षा सर्वप्रथम हाफीसाबाद पंजाब पाकिस्तान में, फिर कराँची में फिर मुल्तान नगर में हुई। आपने परिश्रम करके मेधाबुद्धि को विकसित कर समाज की सेवा में सतत् संलग्न रहकर चरैवेति-चरैवति को क्रियान्वित कर आर्यसमाज में निरन्तर काम करके अच्छे संस्कार अच्छा चरित्र अच्छी शिक्षा का विकास कर लिया, जिससे कि आप समाज की एक आदर्श प्रचारिका के रूप में विख्यात् होने लगीं।

आपका परिणय भी ऐसे कुशल, कर्मठ, सेवाभावी, वेदज्ञ, प्रकाण्ड पण्डित श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री के साथ हुआ, जिससे आप में भी वही और वैसी ही उदात्तभावना पल्लवित होने लगी। आप उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने में कृतसंकल्पा रहीं। सन् १९४७ में देश विभाजन के पश्चात् माता जी ने कार्यक्षेत्र दिल्ली को चुना। आप स्वभाव से सरल, कोमल एवं मृदुभाषिणी थीं। अल्पसमय में ही अपनी कार्य कुशलता का परिचय देते हुए माता जी ने अपने पति के सभी कार्यों को संभाल लिया। माता जी के हृदय में एक टीस थी। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीति, ढोंग, पाखण्ड, आडम्बर को मूल से उन्मूल कर आदिवासी एवं पिछड़े क्षेत्र में स्थित जनजाति को उच्चस्थान प्रदान कराकर उन्हें वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया। 'यथेमा वाचं कल्याणी मावदानी जनेभ्यः' इस वेदोपदेश को साकार किया।

माता जी करुणामयी वेदोपासिका, समाज के कार्यों को करने में निर्भया, कृतसंकल्पा थीं। आप वेदमाता की तरह परोपकारिणी, पृथ्वीमाता की तरह क्षमावती थीं, गौ माता की तरह परोपकारिणी थीं। आपके पति स्व. श्री पृथ्वीराज शास्त्री और पं. प्रकाशवीर शास्त्री व सांसद ओमप्रकाश पुरुषार्थी जी आदि को पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री लाल बहादुर जी शास्त्री की इच्छानुरूप आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना था। अतः उन्होंने सन् १९६८ में असम, नागालैण्ड में अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ नामक संस्था के माध्यम से शिक्षा का कार्य आरम्भ कर दिया, तब आप भी सन् १९७९ से शास्त्री जी के साथ संघ के गतिविधियों में हाथ बटाने लगीं और पतिदेव के स्वर्गवास के बाद उनके सब कार्यों को आप और अधिक परिश्रम से करने लगीं।

माता जी ने सफल संस्था संचालिका और सिद्धहस्त व्यवस्थापिका एवं समाज का नेतृत्व करने वाली नेत्री के रूप में अपनी पहचान बनायी। अपने जीवन में अनेक कष्टों, अनेक दुःखों एवं बाधाओं का सामना किया, परन्तु सभी परिस्थितियों में भी एकमना रहकर आदर्श स्थापित कर अपने पुरुषार्थ से जिस दयानन्द सेवाश्रम संघ रूपी पौधे को कभी नागालैण्ड में लगाया गया था वही पौधा झारखण्ड, असम, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान आदि राज्यों में पुष्पित एवं पल्लवित हो विशाल वटवृक्ष का रूप लेकर फैल चुका है। इस वटवृक्ष के नीचे आज सैकड़ों विद्यार्थी विद्या लाभ लेने के साथ कुटीर उद्योग, सिंचाई, सिलाई, कृषि तथा आधुनिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आपने अपने पुरुषार्थ से अपने सहयोगियों के साथ मिलकर आर्यसमाज रानी बाग दिल्ली में एक गुरुकुल का संचालन किया जिसमें असम, त्रिपुरा, मिजोरम, नागालैण्ड आदि प्रान्तों के ८५ छात्र अध्ययनरत हैं। इनकी सारी भोजन तथा निवास आदि की व्यवस्था आप ही करती थीं।

आपने जीवन के अंतिम चरण तक, ८८ वर्ष की आयु में भी नारी जाति के लिये प्रकाश स्तम्भ के समान मार्ग प्रशस्त करने का कार्य किया।

'अहर्निश सेवामहे' के आदर्श पर चलने वाली, अनेक वैदिक संस्थाओं के संचालन में निपुण 'माता निर्माता भवति' की साक्षात् प्रतिमा, नवयुवकों एवं नवयुवतियों के जीवन में आशा की नई किरण जगानेवाली, दलितोद्धारिणी वात्सल्यमयी, वेदानुरागी माता प्रेमलता जी शास्त्री का भौतिक शरीर आज हमारे मध्य नहीं रहा। यह आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति है। परमेश प्रभु हमें उनके बताए मार्ग पर चलने की शक्ति दें।

– जीववर्द्धन शास्त्री
मंत्री, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ

पूज्य माता जी के निधन पर हार्दिक संवेदना प्रस्तुत करते हुए न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार परमेश प्रभु से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें। तथा आर्यों को उनके अनुकरण की योग्यता प्रदान करें। – अशोक आर्य

हलचल

श्रीमती किरण माहेश्वरी का अभिनन्दन

राजसमन्द क्षेत्र से विधायक व उदयपुर क्षेत्र की लोकप्रिय नेत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी के राजस्थान सरकार में कैबिनेट मंत्री (जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी एवं भूजल मंत्री) नियुक्त किये जाने पर हर्षाभिव्यक्ति करते हुए न्यास व आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर के पदाधिकारियों द्वारा पुष्प गुच्छ व ओ३म् दुपट्टा पहनाकर उनका अभिनन्दन किया।

प्रो. उमाकान्त उपाध्याय का निधन

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान्, ओजस्वी वक्ता, यशस्वी लेखक तथा कोलकाता से प्रकाशित मासिक पत्रिका आर्य संसार के सम्पादक प्रो. उमाकान्त जी उपाध्याय के निधन का दुःखद समाचार सम्पूर्ण आर्य जगत् के द्वारा शोकपूर्वक सुना जावेगा। उनके जैसे मनीषी का चला जाना आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति है। इस दुःखद घड़ी में न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार उपाध्याय जी के परिवारके प्रति शोक संवेदना प्रकट करता है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

श्री हरिनारायण शर्मा का निधन

उदयपुर संभाग के प्रसिद्ध आर्य समाजी श्री हरिनारायण शर्मा का ६१ वर्ष की आयु में दिनांक ३१ अक्टूबर २०१४ को निधन हो गया। श्री शर्मा का निधन आर्य समाज के लिए अतिविशेष क्षति है। श्री हरिनारायण जी को यदि चलता फिरता आर्य समाज कहा जाए तो भी अतिश्योक्ति न होगी। आज बहुत कम देखने में आता है कि जब भी कोई आर्य समाज में नया आता है तो उससे कोई सघन संपर्क स्थापित करे। नतीजा यह होता है कि उसे बड़ा अजनबीपन का अनुभव होता है। श्री शर्मा की यह विशेषता थी कि हर नये आगन्तुक के साथ निकटस्थ संपर्क स्थापित करते थे और उसे आर्य समाज से जोड़ने का प्रयास करते रहते थे। इसी प्रकार जब कोई बहुत दिन से आर्य समाज नहीं आता था तो उनके घर जाकर कारण पूछना व सक्रिय रूप से समाज में आने की प्रेरणा देना उनके स्वभाव में था। ऐसे व्यक्तित्व की क्षतिपूर्ति असंभव प्रायः है। न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

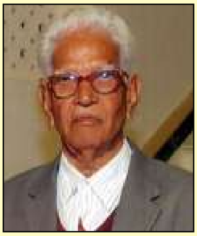

आर्य समाज, गाँधीधाम का हीरक जयन्ती समारोह

आर्य समाज,गाँधीधाम द्वारा अपनी हीरक जयन्ती के अवसर पर १२ दिसम्बर से १४ दिसम्बर तक दिव्य वैदिक सत्संग का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर अमेरिका के श्री गिरीश खोसला एवं उनके साथियों के अतिरिक्त उच्च कोटि के विद्वद्जन पधारकर रहे हैं।

- वाचोनिधि आचार्य

काव्य संग्रह 'समर्पण' का विमोचन

श्रीमती शीला सेठी द्वारा लिखित काव्य संग्रह समर्पण का लोकार्पण न्यूजर्सी में एक समारोह में डॉ. सुखदेव चन्द सोनी, प्रधान आर्य समाज शिकागोलैण्ड एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरोज सोनी के करकमलों द्वारा २२ नवम्बर २०१४ को किया गया। माताजी का काव्य पूर्णतया परमपिता परमात्मा को समर्पित है। इस लघु ग्रन्थ का प्रकाशन श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर द्वारा किया गया। अप्रकाशित काव्य संग्रह के पुस्तक रूप में परिणित होने में अनेक लोगों का सहयोग रहा जिनमें डॉ. सुखदेव चन्द सोनी के अतिरिक्त माताजी के परिवार के सदस्यों विशेष रूप से उनकी बेटियों श्रीमती स्मिति, श्रीमती दीप्ति अरोड़ा, दामाद-श्री आदर्श अरोड़ा, पुत्र-संजय, पुत्रवधू-ममता व उनके पौत्र व दोहितियों का सर्वात्मना सहयोग रहा। सेठी परिवार इस दिव्य प्रकाशन के लिए बधाई का पात्र है। समारोह में माताजी की कविताओं के कुछ अंश प्रस्तुत किए गए। ग्रन्थस्थ कविताओं व उसके प्रस्तुतीकरण को सभी व्यक्तियों द्वारा सराहा गया।

इस अवसर पर माता श्रीमती सेठी जी की कतिपय कविताओं को श्री डॉ. सुखदेव चन्द जी सोनी द्वारा प्रसिद्ध गायिका (भारत में १९६० के दशक में बॉलीवुड की प्रसिद्ध गायिका) श्रीमती वीनू पुरुषोत्तम के स्वर में गायन करवाकर डीवीडी का निर्माण करवाया गया। इस डीवीडी का विमोचन भी इस अवसर पर किया गया। समारोह में गणमान्य सज्जनों एवं माता सेठी जी के परिवारिजनों ने भाग लिया।

ऋषि निर्वाण दिवस सम्पन्न

आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर के तत्वावधान में आयोजित इस समारोह के अवसर पर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य के प्रेरक उद्बोधन के पश्चात् आर्य समाज के वरिष्ठतम सदस्य श्री बसन्त लाल कोहली, डॉ. एस.सी.खोसला का अभिनन्दन किया गया। समाज के प्रधान श्री भँवर लाल आर्य, प्रो. डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्री संजय शाण्डिल्य, श्री मुकेश पाठक व श्री दिनेश अग्रवाल ने श्रीफल, ओ३म् दुपट्टा एवं शॉल द्वारा अभिनन्दन किया।

- भूपेन्द्र शर्मा, उपमंत्री

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ९ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ९** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री हरिराम सांई (बज्जू, बीकानेर), श्री मोटाराम जी (मुंझासर, बीकानेर), श्री हरिन्द्र नाथ यादव (जयसिंह देसर, बीकानेर), श्रीमती सुनीता कुशवाहा (कोटा), श्री सुजीत कुमार (टुपका डीह, झारखण्ड), प्रियंका आर्या (अजमेर), श्री अमन आर्य (अजमेर), प्रेमलता शास्त्री (अजमेर), आचार्य उमाशंकर शास्त्री (तेघड़ा, बिहार), श्री कर्मवीर आर्य (यमुनानगर, हरियाणा)। इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।

कहो वेद हाँ या सहो वेदना

हाँ या ना, इन दो नन्हें शब्दों का संसार में बड़ा बोल बाला है। ये जिसके साथ जुड़ जाते हैं, वह या तो सक्रिय हो जाता है या निष्क्रिय, जीवन्त हो जाता है या मृतवन्त। इसलिए इन शब्दों का विवेकपूर्वक प्रयोग वांछित है, अन्यथा घर समाज में प्रायः हास्यास्पद ही नहीं, त्रासद स्थिति उत्पन्न हो जाती है। बड़े भाई को अपनी धर्मपत्नी को ससुराल में विदा कराने जाना था। अति व्यस्ततावश उसने अपने छोटे भाई को भाभी को बुला लाने के लिए तैयार किया। छोटा भाई ठहरा मन्द बुद्धि। उसने जाने में हिचकिचाहट अनुभव की। कहा- 'मैं तो वहाँ बात भी नहीं कर सकता।' बड़े भाई ने समझाया- 'अधिक कुछ नहीं बोलना, हाँ- नहीं कहते रहना, रुकना नहीं, शीघ्र बुला लाना अपनी भाभी को।' ससुराल पहुँचने पर प्रश्नोत्तर का क्रम कुछ इस प्रकार चालू हुआ। बड़े भाई नहीं आये? हाँ। वे ठीक तो हैं? ना। बीमार हैं? हाँ। चलते फिरते जीवित हैं? ना। क्या तुम्हारी भाभी विधवा हो गई? हाँ। यह सुनते ही वहाँ रोना पीटना प्रारम्भ हो गया। ससुराली जन उस मन्दबुद्धि भाई व उसकी भाभी को अतिशय आकुल-व्याकुल-शोकाकुल दशा में लेकर उसके घर पहुँचे तो क्या देखते हैं बड़े भाई जीवित जागृत हँसते मुस्कराते हुए इन आगन्तुकों के स्वागत में खड़े हैं। उन्हें बताया गया कि आपके छोटे भाई ने तो हम लोगों को अपनी भाभी के विधवा होने का समाचार सुनाकर रुला दिया। बड़े भाई ने अपने छोटे भाई को डाँटते हुए समझाना चाहा कि मेरे जीवित रहते हुए तुम्हारी भाभी कैसे विधवा हो सकती है। छोटे भाई ने जो उत्तर दिया उसे सुनकर अभी तक रोने वाले सभी खिलखिलाकर हँस पड़े। वह बोला- 'तुम्हारे रहते अपनी दादी विधवा हुई कि नहीं। माता विधवा हुई तब भी तुम थे। तब तुम्हारे रहते भाभी विधवा नहीं हो सकती क्या?' बात हास्य की है, साथ ही हाँ-ना के रहस्य की भी।

वेद के साथ जोड़िये- हाँ, तो मिलेगा वेदोपदेश, फिर हमारे जीवन का कल्याण ही कल्याण है। वेद कह उठेगा- **उद्यानं ते पुरुष नावयानं** (अथर्ववेद ८/१/६) हे पुरुष! तुम्हारी उन्नति हो- अनवति कदापि नहीं। जाने अनजाने कैसे भी वेद के साथ जुड़ गया ना- तो बन गया शब्द 'वेदना' अर्थात् व्यथा, पीड़ा, सन्तापकारी अकल्याण। इसलिए हमें हर क्षण सतर्क रहना होगा कि हमारे जीवन में वेद ही वेद रहे, कहीं छिटककर इसके साथ 'ना' न लग जाये, जिससे हम वेदना के भँवर जाल में फँसे रह जायें। नीचे की दिशा- वसुन्धरा पर रहते हुए यदि हम वेद से जुड़ेंगे, तो शेष पाँचों दिशायें हमारे लिए विद्ज्ञाने, विद् सत्तायाम्, विद् विचारणे, विद्- चेतनाख्यान् निवासेषु, विद् लृ लाभे की वर्षा करने लगेंगी। हम जानने-समझने लगेंगे, हम अच्छी प्रकार रहने जीने लगेंगे, हम चिन्तन-मनन करने वाले बनेंगे, स्वशरीर व संसार का सूझ बूझ के साथ समन्वय करने वाले बनेंगे, और लोक-परलोक की उपलब्धि एवं सम्पादन में समर्थ होंगे। आपने देखा, वेद की हाँ में हाँ मिलाने से हमें मिलता है प्रेय-श्रेयदायी उपरोक्त पंचामृत। जिसमें ज्ञान, अस्मिता, विचारणा, चेतना एवं शुभ लाभ का मधुर मिश्रण, हरपल हमें वेदना से बचाता है। वेद का साथ हामी भरने का चमत्कारी लाभ मानव को कैसे मिलता है? वेद से ही पूछते हैं।

ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये साम प्राणं प्र पद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये। वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ।। यजुर्वेद ३६/१

वाणी का आश्रय लेकर मैं ऋग्वेद की ऋचाओं की शरण में जाता हूँ। मेरी वाणी ज्ञान व सत्य का वाचन करने लगती है। मन का आश्रय लेकर मैं यजुर्वेद के अध्यायों की शरण में जाता हूँ। इसके स्वाध्याय से मेरा मन यज्ञीय कर्मों में लग जाता है। मैं अपने प्राण व जीवनी शक्ति का आश्रय लेकर सामवेद के साम मन्त्रों की शरण में जाता हूँ। मैं बोलने में, लोग सुनने में आनन्दित होते हैं। मैं अपने श्रोत्रों का आश्रय लेकर चक्षु, ब्रह्मवेद- अथर्ववेद के विज्ञान की शरण में जाता हूँ। मेरा दृष्टिकोण वैज्ञानिक, तर्कपूर्ण, ज्योतिर्मय बन जाता है। सार तत्त्व यह है कि (वाग ओजः) सत्यवाणी के बल से (सह ओजः) सहयोग का बल बढ़ जाता है। पारस्परिक एकता से (मयि प्राणापानौ) मुझमें दोषों की निवृत्ति होकर प्राण शक्ति का संचार हो जाता है। मेरे जीवन में चार वेद उनके चार व्रतों के रूप में जीवन्त हो उठते हैं। पण्डित हरिशरण सिद्धान्तालंकार के इस पदार्थ में महर्षि दयानन्द का भावार्थ जोड़ दें तो मन्त्रार्थ में चार चाँद लग जायेंगे। 'हे विद्वानों! तुम लोगों के संग से मेरी ऋग्वेद के तुल्य प्रशंसनीय वाणी, यजुर्वेद के समान मन, सामवेद के सदृश प्राण और सत्रह तत्त्वों से युक्त लिङ्ग शरीर स्वस्थ, सब उपद्रवों से रहित और समर्थ होवे।' आपने देखा- वेद के साथ हामी भरने से मनुष्य के समग्र आचार-विचार-व्यवहार एवं व्यक्तित्व में निखार आ जाता है। उसके पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, मन व बुद्धि रूपी सत्रह तत्त्व सुखर-मुखर-प्रखर ओजस्वी हो जाते हैं।

लोक कल्याण का ध्येय धारणकर्त्ता शासक ऐसा प्रबन्ध करते थे कि वेद का सन्देश वातावरण में बहता रहे और जन-जन **'सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन वि राधिषि'** (अथर्व. १/१/४) वेद के अनुकूल चलें प्रतिकूल नहीं। महात्मा विदुर ने अपना अनुभव व्यक्त करते हुए कहा है-

श्रुतं प्रज्ञानुगं यस्य प्रज्ञा चेव श्रुतानुगा।
असम्भिन्नर्यमर्याद: पण्डिताख्यांलभेत च।। (विदुरनीति १/३०)

जिसका शास्त्र ज्ञान विवेक बुद्धि का अनुसरण करता है और बुद्धि शास्त्र ज्ञान के अनुकूल चलने वाली है, जो आर्य मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करता, वह व्यक्ति पण्डित कहलाता है।

बुद्धिश्रेष्टानि कर्माणि बाहु मध्यानि भारत।
तानि जंघाजघन्यानि भारप्रत्यवराणि च।। (विदुरनीति ३/७४)

बुद्धि से सिद्ध होने वाले कार्य उत्तम, भुजबल से होने वाले मध्यम, जो लुक-छिप कर भागदौड़ से किए जायें वे अधम और जो सिर पर संकट डाल दें वे कार्य नीचतर होते हैं। विश्व के प्रथम महर्षि सम्राट मनु ने मनुस्मृति में-

'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्' (मनुस्मृति २/६)

कहते हुए धर्म के चार मूल स्रोत वर्णित किये हैं- यथा अखिल वेद, स्मृति, सदाचार, आत्मतुष्टि अर्थात् जिस कार्य के करने से आत्मा में भय, शंका व लज्जा न उत्पन्न हो अपितु सात्विक सन्तुष्टि व प्रसन्नता अनुभव हो, ये चार 'धर्ममूलम्' धर्म के मूलस्रोत व आधार हैं। राजाओं, राजपुरोहितों एवं राष्ट्र सेनानायकों ने सृष्टि के शुभारम्भ से करोड़ों वर्ष तलक धरती पर ऐसी ही सत्ता को स्थापित व सुख सम्पादित रक्खा। सभी ने जन-जन में वेद की धारणा को दृढ़ बनाये रक्खा। सभी कहते थे वेद हाँ और पास नहीं आती थी-वेदना। वैदिक युगीन सम्राट वेद के प्रति इतने संवेदनशील थे कि वेद की अवज्ञा करने वालों को आर्यावर्त की वसुधा पर रहने नहीं देते थे। उनको मिटाते नहीं- बसाते थे। उन्हें विमान या जलयान में भरकर सागर पार कर देते थे और उनके जीवन-यापन की व्यवस्था भी कर देते थे। इस तथ्य को मैं महर्षि के पूना प्रवचन के आधार पर प्रकट कर रहा हूँ। कुछ सौ वर्ष पूर्व यही कार्य इंग्लैण्ड ने भी किया था, जिससे अमेरिका व आस्ट्रेलिया जैसे राष्ट्रों का उदय हुआ। आर्यावर्त में जहाँ वेद के आध्यात्म व विज्ञान में समन्वय किया जाता रहा है, वहीं ये द्वीप-द्वीपान्तर में नव गठित देश विज्ञान की भौतिक सुखदायी विभूतियों में रमण करने लगे। जहाँ इन्होंने विद्या अनुशासन, शोभा स्वच्छता व समृद्धि में असीम उन्नति की, वहाँ उन्होंने नैतिक सदाचार को दरकिनार कर दिया। इतने पर भी आर्यावर्त या भारत अखिल विश्व का चक्रवर्ती सम्राट बना रहा। रामायण काल में वेद के साथ हुई 'हाँ-ना' की उठापटक का उदाहरण यहाँ पर अप्रासंगिक नहीं होगा। राम चार भाई थे। रावण भी चार भाई थे। राम ने ऋषि वसिष्ठ-विश्वामित्र के गुरुकुलों में जाकर वेद की आध्यात्मिक, वैज्ञानिक व व्यावहारिक शिक्षा ग्रहण की और उसका राष्ट्रोत्थान व जन कल्याण में वितरण किया। रावण ने भी तपस्यापूर्वक वेद का अध्ययन ही नहीं, प्रत्युत् उसका भाष्य भी किया किन्तु वह वेद के अध्यात्म दर्शन को एक ओर छोड़कर उसके विज्ञान रथ

पर आरुढ़ हो गया।

'मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा' (अथर्व ३.३०.३) भाई-भाई से द्वेष न करें- वेद के इस आदेश के प्रति राम ने कहा- हाँ। चारों भाई हर सुखदा-विपदा की स्थिति में परस्पर आबद्ध बन्धु एक बने रहे। वेद वर्चस्व के लिए आततायियों के ध्वंस हेतु वनगमन की स्थिति में राम चित्रकूट धाम में रहे, तो अनुज भरत अयोध्या के सिंहासन पर नहीं जाकर नन्दीग्राम में रहे। इस वेद वाक्य को रावण ने भी पढ़ा था किन्तु गढ़ा नहीं। देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर द्वारा बसाई गई स्वर्णमयी लंका नगरी में ही जाकर अधिकार कर लिया, उनका पुष्पक विमान भी हथिया लिया, जिस पर सवारी करके अपने अग्रज कुबेर को तंग करने में तो लगा ही रहा, अपने अनुज भ्राताओं के वेदानुकूल सत्य परामर्श को सुनकर भी कहता चला गया-ना-ना। परिणामस्वरूप वेदानुयायी राम को उसका संहार कुछ इस प्रकार करना पड़ा, कि हर कोई कहने को विवश हो गया- 'एक लख पूत सवा लख नाती, ता रावण-घर दिया न बाती' एक ईंट खिसकने से जैसे संपूर्ण दीवार दरकने लगती है, वैसे ही वेद-विरोधी अपसंस्कृतियों का अनमेल मिश्रण वेद के सुरक्षा कवच की कीलों को ढीला करने का कोई अवसर हाथ से नहीं जाने देता। राम-भरत भ्राताओं ने मन्थरा के विषवमन को नीलकण्ठ बनकर उसे कण्ठ के नीचे उदर तक उतरने नहीं दिया। अपसंस्कृति का संवाहक महाभारत काल में मामा शकुनि बनकर आ गया, तो सेविका मन्थरा से उसके मामा का ममत्व संबंधी भारी पड़ गया। वेद के भेद को बिना समझे दुर्योधन ने कह दिया था-ना, फिर तो उसने गुरु, पितामह, पिता-माता

सभी के निर्देश ठुकरा कर कह दिया- ना-ना। सर्वमान्य योग योद्धा श्री कृष्ण के संधि-प्रस्ताव के प्रति भी कह दिया था-ना-ना। चक्र सुदर्शनधारी मुरली मनोहर माधव का उद्घोष- 'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्' सफलीभूत हुआ। निज सेना, सम्बन्धी, भाईयों के साथ दुर्योधन मारा ही गया, किन्तु सनातन वेद संस्कृति के स्तम्भों को शिथिल कर गया। फलस्वरूप विगत पाँच सहस्र वर्षों के अन्तराल में वेद के लिए 'ना' कहने वाले अपना सर उठाने लगे। आर्यावर्त भारत के जो चिरन्तन आदर्श पुरुष या नारियाँ थीं उनके श्रेष्ठ शुद्ध जीवन-चरित्र में मिलावट करके उनकी उज्ज्वल छवि को अशुद्ध निकृष्ट बनाया जाने लगा। वेदों में पशु हिंसा-यज्ञों में पशु बलि प्रथायें चलाकर वेद विरोधी अनीश्वरवादी शक्तियों के पनपने का वातावरण बन गया। आदिशंकर ने इस भयावह स्थिति को ताड़कर बाल्यकाल से ही इन शक्तियों को परास्त तो कर दिया, किन्तु इसके लिए उन्हें युवावस्था में ही अपना बलिदान देना पड़ा। पता नहीं उस दुष्काल में ऐसी कौन-सी अति असह्य स्थिति थी कि वे कह गये- 'स्त्रीशूद्रोनाधीयाताम्' स्त्री व शूद्र वेद नहीं पढ़ सकते हैं। फलस्वरूप भारत की सर्वोदयी समरसता में कुछ ऐसा रिसाव हो गया कि पारसी, यहूदी, ईसाई एवं इस्लाम आदि मत-सम्प्रदाय पनप गये, और अपने को धर्म के नाम से प्रचारित करने लगे। वेद के लिए 'हाँ' कहने वालो की संख्या घटने लगी और 'ना' कहने वालों की संख्या बढ़ने लगी। युवा आग्नेय संन्यासी शंकराचार्य ने भारत को वैदिक सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बाँधने के लिए पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण सर्व दिशाओं में मठ-पीठ स्थापित किए, किन्तु पवित्र गंगाजल सदृश वेद की सारस्वत धारा को जिस कलश में भरकर भारतभूमि में सर्वत्र रससिक्त करना चाहते थे, वह उसके एक ही छिद्र 'स्त्रीशूद्रोनाधीयताम्' के द्वारा बंजर में बहती चली गई। सद्भावना भासित वर्ण व्यवस्था जाति-पाति, ऊँच-नीच, छूआछूत के भेदकारी व्रण-आवरण में फँसकर रह गई। स्थिति इतनी संतापकारी सिद्ध हुई कि केरल के जिस पावन ग्राम कालाड़ी में आदिशंकर का जन्म हुआ था, वहाँ एक भी वेदधर्मी घर नहीं बचा, सब विधर्मी हो चुके थे। अनेक शताब्दियों तक भारत माता की वीर सन्तानों को विधर्मियों का सामना करना पड़ा। बलात् धर्मान्तरण के विरोध में लाखों आर्य लाल व ललनाओं को अपना बलिदान देना पड़ा। अन्ततोगत्वा उन्नसवीं शताब्दी में करुणा वरुणालय परमेश प्रभु ने आदिशंकर की परम्परा-परिमार्जन के लिए मूलशंकर को गुजरात प्रान्त के टंकारा में अवतरित किया, जिन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती बनकर भारत की निरीह जनता को वेदों की ओर लौटने का सन्देश दिया।

'यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।' - यजुर्वेद २६/२

वेदवाणी सुनाकर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, अपने भृत्य व स्त्री आदि अतिशूद्र अन्त्यज तक को कल्याणी वेद वाणी पढ़ने व सुनने का अधिकार प्रदान कर दिया। उन्होंने मनु के नाम पर जाति-पाति के भेदभाव का पक्ष लेने वालों को ललकारते हुए इसे अवांछित प्रक्षिप्त सिद्ध करके उनके वास्तविक उद्घोष -

'शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्' - मनु. १०/६५

अर्थात् जो शूद्र कुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के सदृश्य गुणवाला हो तो वह शूद्र ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य हो जाये। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य कुल में उत्पन्न हुआ शूद्र के सदृश्य हो तो शूद्र हो जाये। उत्तम स्त्री, नाना प्रकार के रत्न, विद्या, सत्य, पवित्रता श्रेष्ठ भाषण और नाना प्रकार की कारीगरी सब मनुष्य और सब देश से ग्रहण करें। सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास में मनु के इस निर्देश के होते हुए महाराज मनु पर नारी को वेदाधिकार से वंचित करने का आरोप नहीं लगाया जा सकता है।

स्वामी दयानन्द के द्वारा महाराज मनु के अनुमोदन का सकारात्मक प्रतिफल मिलने लगा। भारत माता की प्रिय सन्तानों का अपने मूलधर्म में परावर्तन का द्वार खुल गया। यद्यपि विधर्मी भीषण आत्मघाती आतंकवाद व अत्याचार करके सम्पूर्ण विश्व में घनघोर चीत्कार व अशान्ति की विकराल वायु बहाने में लगे हैं। इतने पर भी शांति की प्रकाश रेखा कहीं न कहीं अपनी चमक दिखा जाती है जिससे वेद धर्म की जय जयकार हो जाती है। याद आ रहा है कि वह ब्राह्मण जो दिल्ली में प्रचार करता था- हिन्दू धर्म व इस्लाम धर्म दोनों ही मत अच्छे हैं। बादशाह बहलोल लोदी ने उसे बुलवाया

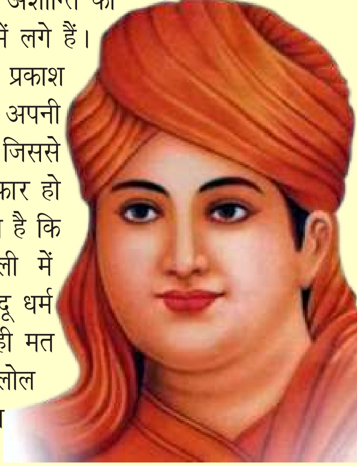

और कहा- हिन्दू मुसलमान दोनों मत बराबर क्यों कहते हो। इस्लाम व कुफ्र समान कैसे हो सकते हैं। तुम मुसलमान बन जाओ नहीं तो मरने के लिए तैयार हो जाओ। मना करने पर उसे महल के सामने ही जीवित अग्नि में भस्म कर दिया गया। दयानन्द व उनके अनेकशः मानस पुत्रों को श्रद्धांजलि दो, जो उनके शास्त्रार्थ व वेदभाष्य ने भारत में एक नवविहान का उदय कर दिया है और अलीगढ़ में ही इस्लाम वंश-वृक्ष के सुमन 'सत्य प्रचार केन्द्र' संचालित करके प्रकाशित करते हैं- पुस्तक 'वेद और कुरान-एकता की ज्योति की ओर' जिसमें इसके लेखक तारिक मुर्तजा ने कतिपय वेद मंत्रों के साथ कुरान की आयतों की समतुल्य भावभूमि का निदर्शन कराया है। कुरान ही क्या कोई भी साम्प्रदायिक ग्रन्थ यदि नकारात्मक विचारों की छटनी व सकारात्मक विचारों की मथनी के साथ प्रस्तुत किया जाता है तो दुर्भावना घटती है और सद्भावना बढ़ती है। यही तो वेद के लिए 'हाँ' है स्वीकृति है। वेद के साथ 'हाँ' जुड़ती है तो वेदना का 'ना' हटता है। मिटती है वेदना, मिलती है सान्त्वना। दयानन्द की वाणी में मुखर हो उठती है ईश्वरीय वाणी- 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।'

- देव नारायण भारद्वाज
एम. आई. जी., प्लॉट नं.- ४५
वरेण्यम् अवन्तिका, प्रथम,
रामघाट मार्ग,अलीगढ़ २०२००१

प्रिय अशोक

कर्मठ ज्ञानी धर्मज्ञ हो तुम,
उच्च कोटि के हो विद्वान्।
दान वीर कर्ण सम हो तुम,
त्यागी हो दधीचि समान।।
सत्यार्थ सौरभ प्रचार हेतु,
कर दिया है जीवन-दान।
तुम्हारा है व्यक्तित्व महान्।।
सुन्दर प्रकाशन कार्य में,
हैं उत्तम श्रेष्ठ विचार,
कला-प्रदर्शन शोभित है
है भाषा पर पूर्ण अधिकार।।
सजग-सचेत लेखनी,
करती लाखों का कल्याण
है व्यक्तित्व महान्, तुम्हारा है व्यक्तित्व महान्।।
धर्म-कार्य संलग्न रहो,
प्रभु कृपा रहे अपार।
दामन खुशियों से भरा रहे,
फूले-फले सुन्दर परिवार।।

शुभाशीष
शीला सेठी, न्यूजर्सी (यू. एस. ए.)

सत्यार्थप्रकाश पहेली-११

रिक्त स्थान भरिये- ईश्वर के विभिन्न नाम याद करिये- पुरस्कार प्राप्त करिये

१. आ		१. श	■	२. चि		■	■	३.	ष	■
४. प्र		४.	म	४.	■	५. दि		■	६.	ण
७.	त्	■	८.	वी	९. स		श	९.		९. न्

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जो सब ओर से जगत् का प्रकाशक है इसलिये उस परमात्मा का नाम है।
२. जो चेतनस्वरूप सब जीवों को चिताने और सत्याऽसत्य का जनाने हारा है, इसलिये उस परमात्मा का नाम है।
३. जो उत्पत्ति और प्रलय से शेष अर्थात् बच रहा है, इसलिये उस परमात्मा का नाम है।
४. जो पिताओं के पितरों का पिता है, इससे परमेश्वर का नाम है।
५. जो प्रकृत्यादि दिव्य पदार्थों में व्याप्त होने से परमात्मा का नाम है।
६. सब का जीवन मूल होने से परमात्मा का नाम है।
७. जो सदा वर्त्तमान अर्थात् भूत-भविष्यत्-वर्त्तमान कालों में जिसका बाध न हो, उस परमेश्वर को कहते हैं।
८. जब ईश्वर का विशेषण होगा तब देव, जब चिति का होगा तब देवी। इससे ईश्वर का नाम है।
९. जो अपने कार्य करने में किसी अन्य की सहायता की इच्छा नहीं करता, अपने ही सामर्थ्य से अपने सब काम पूरा करता है, इसलिये उस परमात्मा का नाम है।

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- "अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ" एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जनवरी २०१५

महात्माजी का छात्रों के प्रति वात्सल्य

डॉ. विनोद चन्द्र विद्यालंकार

आचार्य महात्मा मुंशीरामजी की गुरुकुल के छात्रों से कितनी आत्मीयता और निज सन्तानवत् स्नेह था, इसके अनेक प्रसंग मिलते हैं। इनमें से उदाहरण के तौर पर एक-दो प्रसंग प्रस्तुत कर रहा हूँ।

गंगा में प्रति वर्ष बरसात में भयंकर बाढ़ आती थी। आचार्य महात्मा मुंशीरामजी सहित हम सब छात्र एवं गुरुकुल के कर्मचारी रातभर जागते, टोकरी भर-भर कर मिट्टी किनारों पर डालते रहते। इस स्थिति में प्रत्येक छात्र के लिये तैरना सीखना और उसमें सफलता प्राप्त करना लगभग अनिवार्य-सा हो गया था। एक बार की बात है कि मेरी कक्षा से एक कक्षा नीचे का सत्यपाल ब्रह्मचारी जो एक अच्छा तैराक था- आकाशचुम्बी लहरों में गंगा पार कर दूसरे किनारे चला गया। जब वह रात ९ बजे तक वापस नहीं आया तो आचार्यवर को अत्यन्त चिन्ता होने लगी और उन्होंने हम लोगों को साथ लेकर उसकी तलाश आरम्भ कर दी। पता चला कि वह तो गंगा पार दूसरे किनारे पर आराम से बैठा है। उसे वापस आने के लिये कई आवाजें दी गयीं पर उस ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। इससे अतिविह्वल, चिंतातुर वृद्ध आचार्यवर स्वयं गंगा में कूद दूसरे तट से छात्र को लाने के लिये तैयार हो गये। उनके इस प्रकार गंगा पार करने को हम उनके शिष्य भला कैसे एक क्षण के लिये भी सहन कर सकते थे। अत्यन्त नम्रता से आचार्यवर को इस साहसिक कदम से रोक हम तीन-चार छात्रों ने गंगा में छलांग लगायी और करीब पौन घण्टे बाद सत्यपाल को वापस गुरुकुल तट पर ले आये। उसने आते ही आचार्य जी का चरणस्पर्श किया तब उन्होंने इतना ही कहा- 'सत्यपाल! तुम्हारा इस प्रकार का साहस निश्चय ही प्रशंसनीय है, पर इतनी देर तक वहाँ रहने से हम सब बहुत चिन्तित थे।' ब्रह्मचारी सत्यपाल ने अपने इस अपराध के लिये जब क्षमा माँगी तब प्रत्येक छात्र के लिये अत्यन्त ममताशील वृद्ध आचार्यवर ने उसे अपनी विशाल भुजाओं में आबद्ध कर सतत् स्नेहधारा से आप्लावित कर दिया।

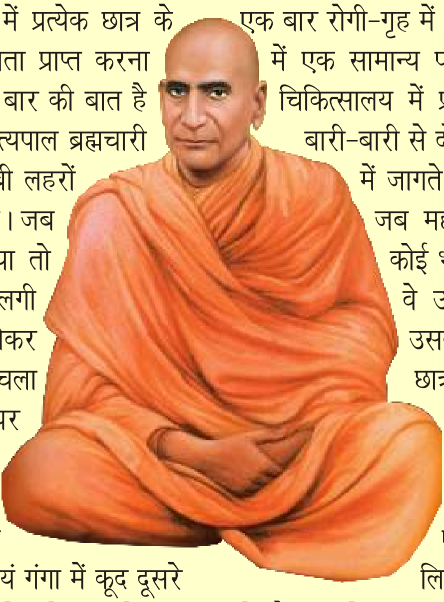

छात्र-रोगी का वमन अपनी झोली में

आचार्य महात्मा मुंशीरामजी का यह नियम था कि वे प्रातः सायं विद्यालय एवं महाविद्यालय के आश्रमों, चिकित्सालय, गोशाला, बाग आदि का 'राउण्ड' लगाया करते थे। चिकित्सालय में प्रविष्ट रोगियों से मिलना और उनका कुशल-क्षेम पूछना उनके लिए अनिवार्य-सा था।

एक बार रोगी-गृह में एक छात्र ज्वर से पीड़ित था। गुरुकुल में एक सामान्य परम्परा थी कि जिस श्रेणी का छात्र चिकित्सालय में प्रविष्ट होता था उसी कक्षा के छात्र बारी-बारी से दो-दो घण्टे रोगी की सेवा के लिये रात में जागते रहते थे। कुछ ऐसा संयोग हुआ कि जब महात्माजी रोगी-गृह में आये तो वहाँ कोई भी नहीं था। छात्र को कष्ट में देखकर वे उसके पास बैठ गये और धीरे-धीरे उसका सिर दबाने लगे। उसी समय रोगी छात्र को एकाएक उल्टी आने लगी। महात्माजी ने देखा कि नीचे चिलमची नहीं है। किसी को आवाज देने की बजाय उन्होंने स्वयं अपनी धोती के एक छोर को फैला उसी में वमन ले लिया और चुपके से बाहर जाकर नाली में फैंक आये। तत्पश्चात् जल से रोगी का मुँह साफ कर उसका सिर पुनः धीरे-धीरे दबाने लगे और डाक्टर के आने तक वहाँ बैठे रहे।

सोते छात्र की साँप से रक्षा

महात्मा जी प्रातः-सायं 'राउण्ड' लगाने के अतिरिक्त आधी रात में भी आश्रम में, विशेषकर छोटे छात्रों के कमरों में

आज शिक्षा जगत् का सम्पूर्ण परिवेश ऐसा है कि शिक्षक-छात्र के सम्बन्ध व्यवसायात्मक तथा औपचारिक रह गए हैं। पढ़ने-पढ़ाने के अतिरिक्त अन्य किसी भी भावना का वहाँ अभाव है। ऐसे में कल्पना करना भी कठिन होता है कि आचार्य अपने शिष्यों को सन्तानवत् न केवल चाहता है वरन् उनके योगक्षेम के लिए कुछ भी करने को तैयार हो। प्रस्तुत संस्मरण गुरुकुलीय-शिक्षा पद्धति में एक सच्चे आचार्य का शिष्य के प्रति सात्विक ममत्व प्रदर्शित करते हैं।

– संपादक

चक्कर लगाते थे। शीतकाल में छोटे छात्र प्रायः नींद में अपनी रजाई से अलग, उकड हो गहरी नींद में सोये देखे जाते थे। कभी-कभी तो छात्र सोते-सोते तख्त से नीचे लुढ़क जाते थे। आचार्यजी बड़े स्नेह और धीमे से छात्र को उठा तख्त पर सुला देते थे और रजाई आदि उढ़ा देते थे। गुरुकुल में गर्मी और बरसात में साँप, बिच्छुओं की बहुलता हो जाती थी और वे आश्रम भवन में भी पहुँच जाते थे। एक बार की बात है, गर्मी का मौसम था। उन दिनों गुरुकुल में बिजली नहीं लगी थी। पढ़ने के लिये मिट्टी के तेल के हरीकेन लैंप व टेबल लैंप थे। गर्मी के मौसम में आश्रम के कमरों से बाहर तख्त निकाल उसी पर छात्र सोते थे। एक बार इसी मौसम में एक छात्र तख्त नीचे भूमि पर गिरा टाँग पर टाँग रखे बेसुध सो रहा था। उसकी टाँग के ठीक नीचे एक काला नाग लिपटा पड़ा था। आचार्यजी रोज के नियम के अनुसार जब वहाँ पहुँचे तो इस भयंकर दृश्य को देख अवाक् से खड़े हो गये। नाजुक स्थिति थी। अगर छात्र को उठाने की चेष्टा करते तो साँप द्वारा उछलकर छात्र को काट लेने का दर था। आचार्यजी ने सबसे पहले कुछ दूरी पर सो रहे कक्षा के अधिष्ठाता को जगाया और सारी स्थिति समझायी। अधिष्ठाता को अत्यन्त सावधानी से बच्चे को उठा तख्त पर लिटा देने और उसी क्षण स्वयं साँप के सिर पर लाठी टिका उसे वहीं कुचल देने का कार्यक्रम बनाया। उसी के अनुसार कार्य किया गया। बालक को सुरक्षित उसके बिस्तर पर सुला दिया गया और साँप का वहीं अन्त कर दिया गया।

(साभार- स्वामी श्रद्धानन्दः एक विलक्षण व्यक्तित्व)

भगवान में विश्वास

कथा सरित

एक अमीर आदमी था। उसने समुद्र में अकेले घूमने के लिए एक नाव बनवाई। छुट्टी के दिन वह नाव लेकर समुद्र की सैर करने के लिए निकला। आधे समुद्र तक पहुँचा ही था कि अचानक एक जोरदार तूफान आ गया। उसकी नाव पूरी तरह से

तहस-नहस हो गई। लेकिन वह लाइफ जैकेट की मदद से समुद्र में कूद गया। जब तूफान शांत हुआ तब वह तैरता तैरता एक टापू पर पहुँचा लेकिन वहाँ भी कोई नहीं था। टापू के चारों ओर समुद्र के अलावा कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। उस आदमी ने सोचा कि जब मैंने पूरी जिन्दगी में कभी किसी का बुरा नहीं किया तो मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ?

उस आदमी को लगा कि भगवान ने मौत से बचाया तो आगे का रास्ता भी भगवान ही बतायेगा। धीरे-धीरे वह वहाँ पर उगे झाड़-पत्ते खाकर दिन बिताने लगा। अब धीरे-धीरे उसकी श्रद्धा टूटने लगी, भगवान पर से उसका विश्वास उठ गया। उसको लगा कि इस दुनिया में भगवान है ही नहीं। फिर उसने सोचा कि पूरी जिन्दगी यहीं इस टापू पर ही बितानी है तो क्यों न एक झोपड़ी बना लूँ। फिर उसने झाड़ की डालियों व पत्तों से छोटी-सी झोंपड़ी बनाई। उसने मन ही मन कहा कि आज से

झोपड़ी में सोने को मिलेगा। आज से बाहर नहीं सोना पड़ेगा। रात हुई ही थी कि अचानक मौसम बदला, बिजलियाँ जोर-जोर से कड़कने लगीं। तभी अचानक एक बिजली उस झोपड़ी पर आ गिरी और झोपड़ी धधकते हुए जलने लगी। यह देखकर वह आदमी टूट गया। आसमान की ओर देखकर वह बोलने लगा कि- तू भगवान नहीं राक्षस है। तुझमें दया जैसा कुछ है ही नहीं। तू बहुत क्रूर है। वह व्यक्ति हताश होकर सर पर हाथ रखकर रो रहा था कि अचानक एक नाव टापू के पास आयी। नाव से उतरकर दो आदमी बाहर आये और बोले कि- हम तुम्हें बचाने आये हैं। दूर से इस वीरान टापू से जलता हुआ झोपड़ी देखा तो लगा कि कोई उस टापू पर मुसीबत में हैं अगर तुम अपनी झोपड़ी नहीं जलाते तो हमें पता नहीं चलता कि टापू पर कोई है। उस आदमी की आँखों से आँसू गिरने लगे। उसने ईश्वर से माफी माँगी व बोला कि मुझे क्या पता कि आपने मुझे बचाने के लिए मेरी झोंपड़ी जलाई थी।

साभार- Anmolvachan.nic

सर्दी की दुआ बथुआ

चरक संहिता, सुश्रुत संहिता इत्यादि प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों में भी बथुए का उल्लेख मिलता है। हकीमों के अनुसार बथुआ ठंडा तथा खुश्क होता है। यह शरीर में शीतलता तथा कोमलता उत्पन्न करता है। यह यकृत-विकारों को दूर करता है। इसके सेवन से नवीन रक्त का निर्माण प्रचुरता से होता है। बथुआ बहुत पुराना और मजबूत शाक है। पुरातत्ववेत्ताओं को लौह-युग के अवशेषों में भी इसके चिह्न प्राप्त हुए हैं।

सर्दी के दिनों में बथुआ बहुतायत से मिलता है। यह खरपतवार की तरह शीतकालीन फसल के साथ बहुतायत से उगता है। इसका वानस्पतिक नाम 'चेनोपोडियम अल्बम' है। होमियोपैथी में इस नाम से दवा भी है। पालक की तरह गुणकारी बथुए का साग स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है। बथुआ फसल की दृष्टि से बहुत पुराना और मजबूत शाक है। मजबूत होने के कारण यह हर तरह की जमीन में पनपता है, जल्दी नष्ट नहीं होता और सोयाबीन तथा पालक के साथ बहुत अच्छी तरह उगता है। जब तक इसकी फसल रहती है इसे ताजा खाया जाता है। इसके पौष्टिक गुणों के कारण मेथी की तरह सुखाकर भी रखा जाता है। सूखे बथुए को आलू के साथ सब्जी की तरह पकाया जाता है या फिर पत्तियों का चूरा बनाकर दाल के साथ मिलाकर भी खाते हैं।

२०० ग्राम बथुए में अनुमानित पोषक तत्व इस प्रकार हैं- जल- ७८.५ ग्राम, प्रोटीन-२.६ ग्राम, वसा-६.३ ग्राम, रेशा-६.७ ग्राम, कार्बोहाइड्रेट-१.८ ग्राम, कैल्शियम-१५० मि.ग्रा., फास्फोरस-७६ मि.ग्रा., लौह तत्व-३.१ मि.ग्रा., खनिज लवण- १.१ ग्राम, कैरोटीन-१७४० मी.ग्रा., थायेमिन- ६.६२ मि.ग्रा., रिबोफ्लेविन- ६.२३ मि.ग्रा., नियासिन- ६.५ मि.ग्रा, विटामिन सी- २४ मि.ग्रा., ऊर्जा- २६ कि. कैलोरी। बथुए में पारा, सोना और क्षार भी पाया जाता है।

स्वदेशी चिकित्सा पद्धति 'आयुर्वेद' के अनुसार 'बथुए' में अनेकानेक औषधीय गुण होते हैं। आयुर्वेदाचार्यों की यह मान्यता है कि बथुआ मधुर रसीय, ठंडा, क्षार-युक्त तथा विपाक में कटु, कृमिघ्न, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, शुक्रवर्धक, बल-प्रद, प्लीहा रोग, रक्त पित्त, कृमि इत्यादि रोगों को दूर करने में समर्थ होता है। यह शरीरगत विषम अवस्था को प्राप्त हो रहे तीनों दोषों को सम अवस्था में लाता है। प्रवाहिका, सूखी-खाँसी, ऊरु- स्तम्भ, स्थानिक दाह, जीर्ण-अपच, इत्यादि रोगों से पीड़ितों को नियमित रूप से बथुए की सब्जी सेवन करते रहना चाहिए।

बथुए का सेवन सलाद के अन्य द्रव्यों के साथ मिलाकर, भोजन के साथ किया जा सकता है। बथुए के नियमित सेवन से भूख खुलती है तथा शरीर की समस्त धातुओं का पोषण होता है। बथुए में काफी मात्रा में उपस्थित जीवन-पोषक तत्वों के कारण, इसका नियमित सेवन करने वाले 'कुपोषण' से पीड़ित नहीं होते। गर्भवती एवं प्रसूताओं के लिए भी यह परम हितकर है। यह स्वयं में ही पूर्ण संतुलित आहार-द्रव्य है। बथुए का रस अतिशीघ्र ही रक्त कणिकाओं में वृद्धि करने में समर्थ होता है। बथुए के रस में मिश्री मिलाकर पिलाने से पेशाब की रुकावट दूर होती है। बथुए में विटामिन 'ए' प्रचुर मात्रा में होता है। इसलिए इसके नियमित सेवन से नेत्र ज्योति बढ़ती है तथा रतौंधी में भी लाभ होता है। बथुए को बुद्धिवर्धक भी माना गया है।

महिलाओं तथा एनीमिया से पीड़ितों के लिए इसका सेवन वरदान सिद्ध होता है। इसका कुछ दिनों तक सेवन करने से कब्ज दूर हो जाता है और पेट मुलायम बन जाता है। यह ठण्डा होने से 'पीलिया' को भी दूर करता है। पित्त-प्रकृति वालों के लिए यह विशेष रूप से लाभदायक होता है। पित्त के कारण उत्पन्न हुई एसिडिटी, विविध चर्म रोग, सर्वशरीरगत दाह इत्यादि को बथुआ दूर करता है।

बथुए के पत्तों को पानी में उबालकर तथा उस पानी में शक्कर मिलाकर पीने से दस्त साफ होता है, तथा गुर्दे की पथरी टूट जाती है। मलेरिया, टाइफाइड इत्यादि के कारण बढ़ी हुई तिल्ली भी इस के प्रयोग से सामान्य अवस्था में आ जाती है। रक्त के विभिन्न उपद्रव, पेट के कीड़े, बवासीर तथा सन्निपात में भी मुफीद है। इसके पत्तों का उबाला हुआ पानी पीने से रुका हुआ पेशाब खुलकर आने लगता है। इसका काढ़ा रेशमी कपड़ों के धब्बे मिटाने के लिए भी उपयोगी होता है।

बथुआ दिल को शक्ति प्रदान करता है। यकृत में गाँठें पड़ने के कारण होने वाले पीलिया के रोगी को सात माशे बथुए के बीजों को इक्कीस दिन तक नियमित देने से गांठें बिखर जाती हैं तथा पीलिया समाप्त हो जाता है। बथुए का साग 'अर्श' के रोगियों के लिए परम हितकारी सिद्ध होता है। बथुए का ताजा रस निकाल कर, उसमें नमक मिलाकर पीने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

बथुए के बीजों के दो ग्राम चूर्ण को थोड़े से नमक एवं शहद के साथ लेने से अमाशय की सफाई होकर, दूषित-पित्त शरीर से बाहर निकल जाता है। बथुए के डेढ़ तोला बीजों को आधा सेर पानी मे उबालें। जब आधा पानी शेष बच जाए, तब उसे छानकर पिलाने से, शिशु-जन्मरत स्त्री को कष्ट-मुक्ति मिल जाती है। यह प्रयोग आज भी हमारे ग्राम्यांचलों में बहु प्रचलित है।

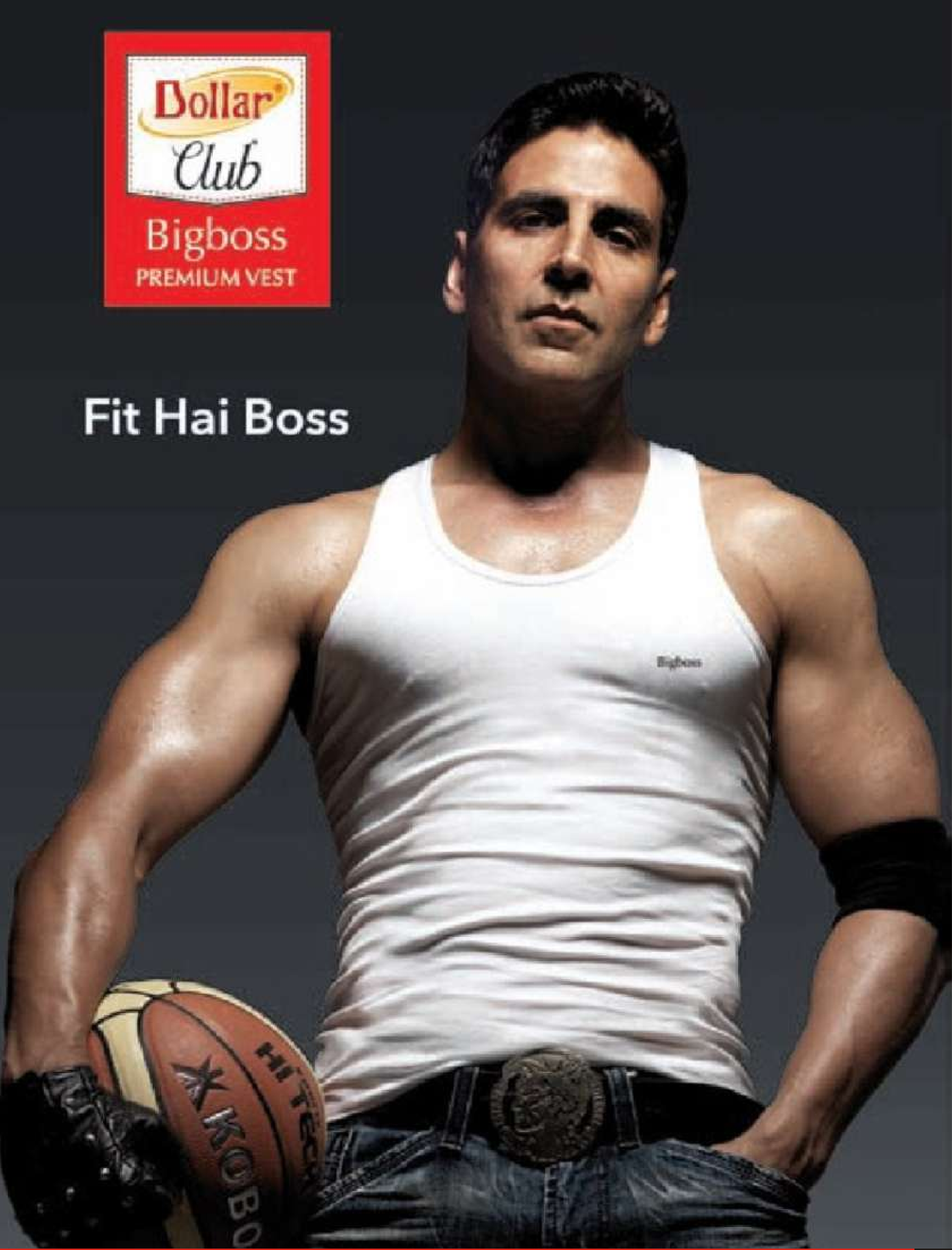
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 December-2014 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

महर्षि दयानन्द सरस्वती

जो राजा काम से उत्पन्न हुए दश दुष्ट व्यसनों में फँसता है, वह अर्थ अर्थात् राज्य, धनादि और धर्म से रहित हो जाता है..... इसमें यह निश्चय है कि दुष्ट व्यसन में फँसने से मर जाना अच्छा है।

सत्यार्थप्रकाश- पृ. १४५-१४६

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य